Kashyap

KHIR BHAWANI TIMES

खीर भवानी टाइम्स





मां उमा

चामरं दक्षिणे हस्ते कमलं चोत्तरे तथा ।
रक्ताम्बरा दयामूर्तिः प्रसन्नोमास्तु सर्वदा ॥

AMBPHALLA - JAMMU

The Holy SHRINE OF MATA UMA-DEVI

मां उमा का पवित्र स्थल

Situated in the Kuthar range of the Pan-chan-Than hills in Kashmir Valley, the holy shrine of Mata Uma Devi is one of the most ancient shrines of Kashmir. This abode of Mata Uma located at Brari-Angan (Uma Nagari) Anantnag in Kashmir has been mentioned in the Raja Tarangini by Kalhan and is also described in the Neelmat Puran, the ancient history of Kashmir.

It has been one of the most revered shrines of Kashmir where thousands of devotees throng to pay their obiesance. Legend goes that Brari, a Yakhshani a devotee of mother Uma, pursuaded her to come down to a place of solitude for her meditation to secure her beloved Lord Shiva Agreeing to her request Mata Uma settled at the place which came to be known as "BRARI ANGAN" since that time.

On 13th April, 1781 A.D Haji Karam Dad Khan, the then Afgan Governor of Kashmir who was impressed by the spiritual grace of Goddess Uma Devi and her devotee Shri Shiv Ram Koul (Jalali), offered a jagir of 1600 kanals of revenue free agriculture land and a strip of forest facing the site for the Shrine.

The beautiful marble temple and its beautiful marble idol of Bhagwati Uma Devi 5'-4" in height which has been a source of inspiration for one and all irrespective of caste and creed was demolished by the fundamentalists and militants during the night of 7/8 December, 1992. Besides the material loss of Lakhs of rupees, the destruction and desecration has brutally wounded the souls of thousands of devotees of Mata Uma which is very difficult to heel.

खीर भवानी टाइम्स

KHIR BHAWANI Times

Official Organ of Kashmiri Pandit Sabha, Ambphalla Jammu.

नवम्बर-दिसम्बर 1995 Nov.-Dec. 1995
Vol. I No. 3-4

Rates of Advertisement

Matrimonial (40 words)...	Rs. 60/-
Each Additional Word	... Rs 2/-
Back Cover	... Rs. 2000/-
Inner Cover	... Rs 1500/-
Full Page	... Rs 900/-
Half Page	... Rs 450/-
Quarter Page	... Rs. 200/-

Rates of Subscription

Annual	... Rs. 80/-
Price of the Copy	... Rs. 10/-
Annual Subscription Outside India	... US $ 30
Collection Charges for outstation Cheques	... Rs. 10/-

Address to "KASHYAP SAMACHAR" (JAMMU.)

हिन्दी भाग

कश्मीरी भाग

ENGLISH SECTION

From the President

(अध्यक्ष की ओर से)

My dear Brothers and Sisters,

Namaskaar,

The sword of Islam swayed hundreds of our men and women, young and old mercilessly and forced us to leave our home and hearth. My brethren have been waiting for return to sweet homeland braving sweltering heat, storm and cold winds in tents, pigeon hole tenaments and rented accomodation. Their hope to return home has sustained for more than six years. The tragic pol tical, economical, educational ramification of exodus have been debated, discussed and partly taken care of by various K. P. Organizations from time to time. However, the social crises brewing in our society is slowly and steadily eating away its vitals and in case the problem is not taken care of well in time, I fear we may be in for deep social catastrophy.

This alarming situation could not be visualized in depth by me earlier when I found occasionally a case involving K. P. families approaching Sabha for amicable settlement. Family disputes pertaining to our sons and daughters are not a new phenomenon in our society. What brings anguish to my mind and perturbs me is the ever increasing number of cases coming to K P. Sabha every week and arrogance shown by several parents in listening to the sane advice and admonition of community elders for the future good of their children The rise in economic status and hallow of ego has hightened the tension in the families. This can further disintegrate our families and raise tension effecting community health In fact a large number of our young boys and girls are being lured by other communities to enter into matrimonial relations and our community with glorious past is shrinking. Our population is perhaps decreasing at a phenominal rate. Effective steps are required to be taken by the parents to educate their children about moral, family, religious and social obligations.

This will offset the mental pressure on our children built by modern life and provide a healthy atmosphere in family and there by in our society.

(TRILOKI NATH KHOSA)

सम्पादकीय

उपेक्षा का लम्बा सिलसिला

क्या कश्मीरी पंडित उपेक्षित होने को अभिशप्त हैं ?

यह प्रश्न आज हर सोचने समझने वाले के मन को भीतर ही भीतर कुरेद रहा है। यह स्थिति निराशा की है और कभी-कभी हताशा (डेस्परेशन) बन जाती है। इसका परिणाम आने लगा है। आज से दो या तीन महीने पहले, जब चुनाव अब हुए अब हुए लगते थे तो जम्मू, उधमपुर, दिल्ली, बम्बई, देश-विदेश हर कहीं हमारी प्रमुख चिन्ता यही थी कि चुनाव में हमारी स्थिति क्या होगी ? हम मत दें तो किसे दें ? क्या हमें मतदान के लिए कश्मीर जाना होगा या यहीं चुनाव-केन्द्र स्थापित करके हमें वोट देने के लिए कहा जाएगा हम इस चिन्ता से भी आंदोलित थे कि जब हमारे प्रत्याशी नहीं होंगे तो हम मत किसे दें ? हमारी कुछ संस्थाओं ने राजनीतिक राय को एक ही दिशा देने के लिए बड़ी पहल की। कश्मीरी पंडित सभा ने एक मंच पर इकट्ठा करके उनमें सोच की एकता पैदा करने की बड़ी कोशिश की। जम्मू युनिवर्सिटी के कुछ बुद्धिजीवी अध्यापकों ने अलग से संगोष्ठियां करा के एक ही प्रतिनिधि मत उभारने में सफलता प्राप्त की। इस सब अंतर्क्रिया का एक परिणाम यह निकला कि "प्रवास में चुनाव क्षेत्र" (कांसटिट्यूएंसीज़) के बारे में फैसला लिया। इस प्रकार की धारणा ज़ोर पकड़ती गई और सोचने समझने वाले लोग इस बात पर सहमत होने लगे कि हमारे लिए राज्य की विधान सभा में कुछ चुनाव क्षेत्र नहीं रखे जाते तो हम चुनाव में भाग नहीं लेंगे। मतलब यह कि पिछले तीन-चार महीनों में लगा कि हम शायद समय की चेतावनी का समयोचित उत्तर देने के लिए जागृत हो गए हैं।

एक पूरी हलचल दिखाई दी, सम्पूर्ण जाति में।

1990 के बाद पहली बार लगा कि शायद हम में अपनी राजनीतिक चेतना लौट आई है।

और फिर चुनाव के ठीक पहले कुछ सक्रिय मोरचे वाली संस्थाओं ने चुनाव का बहिष्कार करने का निर्णय किया। यह निर्णय भी एक सही क़दम था जिसने फिर यह आभास दिया कि हम अब सही प्रतिक्रिया देने की स्थिति में हैं। पर साथ ही इससे यह पता भी चला कि हम सरकार की लगातार उपेक्षा के कारण महत्वहीन समझे जाने लगे हैं, अत: किसी भी सरकारी प्रक्रिया का हम डट कर विरोध करेंगे।

हमने देखा कि पिछले तीन चार महीने की हमारी तमाम क्रिया प्रतिक्रिया के बावजूद, हमारे तमाम चिल्लाने के बावजूद, सरकार के संबद्ध व्यक्तियों-संस्थाओं के पास जाकर अपील करने के बावजूद सरकार चुप रही। गृह मंत्री, चुनाव-आयोग, जम्मू कश्मीर आने वाले राजनीतिक प्रेक्षक, राज्यपाल, यहां के राजनीतिक दल—किसी ने भी हमारी "निर्वासन में निर्वाचन क्षेत्र" के सुझाव पर राय प्रकट नहीं की। शायद हमारे बुद्धिजीवियों के तर्क में इतना ज़ोर था, संविधान का ऐसा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था कि उस पर बहस करके उसे अस्वीकार करने की ज़रा भी गुंजाइश नहीं थी। इसलिए निर्णायक की पदवी पर बैठे हर व्यक्ति या सत्ताधारी ने मौन धारण करना और हमें लगातार उपेक्षित करने में ही अपना बचाव समझा।

मगर हमारी दशा क्या हो गई ?

हम इस बाकायदा उपेक्षा का शिकार होते रहे हैं और लगता है कि यह सिलसिला जारी रहेगा। अपनी इस दुर्दशा पर हम क्या करें ? मन मार कर बैठ जाएंगे ? या अपनी संजीवनी शक्ति का सहारा लेकर इस परीक्षा में भी पार उतरेंगे सफलता के साथ ?

□ डॉ० संजना कौल

पत्थर और धात का जमाना

[प्रख्यात हिन्दी कहानीकार संजना कौल अपने परिवेश के प्रति कितनी संवेदनशील हैं यह उनकी इस बहुचर्चित कहानी से पता चलता है। इसमें कश्मीरवासी रचनाकार के मन में उठ रहे प्रश्नों को बहुत सशक्त मुहावरे में व्यक्त किया गया है। गत वर्ष हम इस कहानी तथा इस पर जम्मू की एक कहानी गोष्ठी में हुई बहस का संक्षिप्त ब्योरा दे चुके हैं।]

पता नहीं कहां से किशनलाल जी को वह पर्चा मिल गया था, पीले रंग के कागज़ पर उर्दू में छपा भारत द्रोह ? ज़हरीला देशद्रोही प्रोपेगैंडा, रात का खाना खाने के बाद उन्होंने पत्नी और बेटी के साथ बैठकर पढ़ना शुरू कर दिया। पर्चे के बाएं कोने पर शमशीर की मूठ पकड़े हुए हाथ था और उसके नीचे उर्दू का शे'र दर्ज था।

मैं तुझ को बता दूंगा तकदीरे उमम क्या है।

शमशीरो सिनां अव्वल ताऊसो रबाब आखिर।

फ़ारसी भाषा के विद्वान और उर्दू साहित्य के प्रेमी किशनलाल जी ने इन्दु को इन पंक्तियों का अर्थ समझाया तो वह बेसाख्ता बोल उठी, "इन्होंने तो आग उगली है।"

किशनलाल जी बेटी की बात पर हंस दिये, "अरे नहीं! सब पाग़लपन है। इन सालों के हाथ में हो तो ये कश्मीर में एक और पाकिस्तान बनाकर ही दम लें, लेकिन लड़कर नहीं, कश्मीर को तो आप प्लेट में सजाइए और ऊपर से चिपका दीजिए चांदी का वरक फिर इन्हें पेश कर दीजिये कि लीजिए हजूर कश्मीर हमने आपको तोहफे में दे दिया। बस, बात बन जायेगी। शमशीर या बर्छी उठाना इनके बस का नहीं है।"

और इन्दु को बार-बार लगता है, कितना ग़लत सोचा था पापा जी ने!

पहले बम फटे, कुछ अपंग हुए, कुछ की जान गई, फिर छिटपुट गोलियां चलीं और उसके बाद दिन-दहाड़े लोगों की लाशें बिछने लगीं, और फिर वह भयानक रात!

माघ का कृष्ण पक्ष! चांदनी का दूर-दूर तक नाम नहीं। सुनसान सड़कें और गलियां और घरों-मकानों के भीतर उगता हुआ जान लेवा तनाव! एकाएक चारों तरफ की मस्जिदों से आकाशभेदी नारे गूंजने लगे :

यहां क्या चलेगा—निज़ामे मुस्तफा!

'भारती' कुत्तो—वापस जाओ!

आईने हिंद, आईने हिंद—मंजूर नहीं,

मंजूर नहीं।

हम क्या चाहते हैं—आज़ादी!

इस्लाम—ज़िन्दाबाद!

घर में सब का दिल धक-धक करने लगा किशनलाल जी उठकर बेचैनी से कमरे में टहल लगे। अम्मा रसोई से राख सने हाथ लिये बाह

निकली और बुरी तरह कांपने लगी। खुद इन्दु का चेहरा पीला पड़ गया था।

सीधी-साधी अम्मा ने अगले दिन नींद से उठ कर रोज़ की तरह वितस्ता को प्रणाम करने के लिए खिड़की खोली और वहां का नज़ारा देखकर गिरते-गिरते बची। कई नौजवान किनारे पर खड़े दरिया के आरपार पाकिस्तान और आज़ाद कश्मीर के झंडे तान रहे थे। इन्दु ने बिस्तरा छोड़कर देखा तो उसकी आंखें फट गयीं, उसने धीरे-से पिता को जगाया, 'पापा जी, दरिया के ऊपर झंडे ताने जा रहे हैं।''

किशनलाल जी उठकर खिड़की के पास खड़े हो गए और स्तब्ध रह गये। अपनी आधी से ज्यादा उम्र उन्होंने कश्मीर में बितायी थी। कश्मीर की खूंखार राजनीति के चश्मदीद गवाह रहे थे, लेकिन यह सब देखकर वे जड़ से हिल उठे।

अखबारों की भयानक खबरें! कश्मीरी हिंदुओं की कश्मीर छोड़कर देश के अन्य हिस्सों में शरण! मास एक्सोडस!

सरकारी अफसरों, शिक्षकों और प्रोफैसरों पर हमले! इन्दु जब-जब भी घर से बाहर कदम रखने और कॉलेज जाकर इतिहास पढ़ने की बात सोचती थी, भीतर से ठिठुरने लगती थी। कुछ दिन पहले छोटे चाचा का फोन आया था, ''हैलो, भाई जी! क्या कर रहे हैं आप वहां? छोड़ दीजिए सब कुछ और आ जाइए। सुना है, फॉर्टी सेवन से भी ज्यादा खतरनाक हालत है कश्मीर की। घर में जवान लड़की है। सुना है, इनके इरादे खतरनाक हैं।''

किशनलाल जी न तो भावुक हुए और न उन्हें कोई अतिरिक्त खुशी हुई। उन्होंने जैसे जवाब देने के लिए कहा, ''ठीक है, तुम दो कमरे हमारे लिए तैयार रखना।''

''ऐसा है, भाईजी, मकान के ऊपर के हिस्से में रमेश और उसकी बहू रह रहे हैं, बीच के दो कमरों में मैं और आपकी बहू, आप शायद नहीं जानते, पप्पू और गीता भी आकर निचले हिस्से में रहने लगे हैं। फिर तो जो बड़ा कमरा है न, उसमें कुछ दिन बाद अंजलि आकर रहने लगेगी। फिर भी आप आ जाइए देख लेंगे।''

''ठीक है।'' किशनलाल जी को कोई दुःख या उत्तेजना नहीं हुई। लगा, उत्तर उनके लिए प्रत्याशित ही था।

''अब क्या होगा?'' फोन पर हुई बातचीत के बारे में सुनकर पत्नी ने निराश होकर कहा।

''होना क्या है? जैसे रहते आये हैं, रहेंगे।''

''इन्दु है।'' अम्मा ने आंखें पोंछ कर कहा।

''क्यों अम्मा? पंजाब में लड़कियां रह रही हैं या नहीं? आइन्दा मेरे लिए ऐसा मत कहना।'' इंदु ने तमक कर कहा।

लड़की हुई तो क्या करें डूब मरें या फूंक डालें अपने आपको? उसने सोचा, कहीं वह बेवकूफी की हद तक निडर तो नहीं है? उसे बुरी तरह शमीम की याद आने लगी जो लम्बी छुट्टी पर गई थी और कुछ ही दिनों में लौटने वाली थी।

खूब हंसमुख और उसे खूब प्यार करने वाली शमीम कॉलेज में अंग्रेज़ी पढ़ाती थी दोनों की नौकरी एक साथ एक ही कॉलेज में लगी थी। इंदु के यूनिवर्सिटी के सहपाठी असरार से प्रेम के बाद उसने बाकायदा विवाह कर लिया था।

कॉलेज जाती थी इंदु और उसे अपने आप पर आश्चर्य होता था कि वह इतनी खामोश भी रह सकती है। उसे बार-बार लगता था, वह किसी अनजाने शहर में अजनबी लोगों के बीच आ गई है। यही समझ में नहीं आता था कि क्या बोले। साफ-गोई से काम लेकर खतरा मोल ले या अकेलेपन से मुक्ति पाने के लिए उन लोगों की हां में हां मिलाये जिन की बातें मानने को वह कभी तैयार नहीं होगी। उसे लगता था, उसे बेरहमी से हाशिए पर धकेल दिया गया है।

कॉलेज में लड़कियों द्वारा क्लासों का बहिष्कार! क्लास में गुप्त साम्राज्य के इतिहास पर बोलती हुई इन्दु के लैक्चर में अजीब-सा अटपटापन आ गया था। पूरी सात लड़कियां नोटबुक्स बंद करके बिना उससे पूछे क्लास से बाहर चली गई थीं। बाकी या तो सिर झुकाये बैठी थीं या चुपचाप उसे घूर रही थीं।

वह समय से पहले क्लास छोड़ने की तैयारी कर ही रही थी कि तीन लड़कियां दरवाज़े पर खड़ी हो गयीं। इंदु की भौंहें एकाएक तन गईं, "क्या बात है?"

"मैडम, लड़कियों को छोड़ दीजिए।" बुर्का पहने एक लड़की ने निहायत ढीठता से कहा।

"क्यों? आपको इनके पढ़ने से क्या तकलीफ है?" इंदु ने गम्भीरता से कहा।

"मैडम, क्लासों का बायकॉट होना है। हमें जुलूस में जाना है।" एक और लड़की ने कहा।

"ठीक है।" वह रजिस्टर उठाकर स्टाफरूम की तरफ बढ़ गई।

दरवाज़े पर पहुंचते ही उसका चेहरा चमक उठा, वहां शमीम अकेली बैठी थी छुट्टियां बिताने के बाद पहली बार आई थी। वह झपटकर उठी और उससे लिपट गई, "सो नाइस टु सी यू! तुम यहां कैसे रहीं? पहले बताओ, तुमने लड़कियों से कुछ कहा तो नहीं? किसी को डांट तो नहीं दिया?" उसने एक सांस में कई सवाल कर डाले।

वह इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुई। उसे पकड़ कर सोफे पर बिठाया, "देखो, ज्यादा रुआब मत झाड़ना, किसी लड़की से उलझना मत, ये चूल्हे में जाएं या दरिया में डूब मरें। हमें इससे कुछ भी मतलब नहीं तुम अपने आपको बचाओ। इनके भाई-बिरादर जिहाद करने निकले हैं, कभी भी तुम्हें गोली से उड़ा देंगे।" वह जल्दी-जल्दी सब कुछ कह गई।

इन्दु ने शमीम की तरफ देखा, उसके कंधों तक कटे रेशमी बाल रबड़ से बंधे थे। दुपट्टा उसने पेशानी तक ला खींचा था। ढीली-ढाली कमीज़ और सलवार! कश्मीरी रेशम की साड़ियों की दीवानी शमीम को इस रूप में देखकर वह समझदारी से मुस्करा दी।

शमीम ने उसे मुस्कराते देखा तो धीरे-से हंसी, "असरार ने कहा, साड़ियों को बक्से में बंद करके रख दो वरना मारी जाओगी। हिन्दुस्तानी एजेंट के लिए तो एक ठांय काफी है। तो खालिस मुसलमान औरत बनकर घर से निकली हूं।"

"मैडम, आपसे मिलने कोई गेट पर आये हैं।" चपरासी ने आकर इन्दु से कहा।

इन्दु गेट की तरफ बढ़ गई।

बाहर जवाहर भाई खड़े थे। उन्होंने उसे देखा तो लपक कर आये तो उसे बांह से पकड़कर फुटपाथ के एक खाली कोने पर ले गये।

"क्या हुआ, भाई साहब?" इंदु ने घबराकर पूछा।

जवाहर भाई ने बेवजह पसीना पोंछा और फुसफुसाये, "देखो, मैं कल सुबह कश्मीर छोड़कर जा रहा हूं। मुझे चिट्ठी मिली है, मैं इन लोगों के हाथों कुत्ते की मौत नहीं मरना चाहता बस, बहुत हुआ वे हांफ गये।

इन्दु का सिर चकराने लगा क्या करे, कैसे बचाये इन्हें? किसी तरह बोली, "हमारे घर चलिये, भाई साहब।"

"नहीं, मैं तुम लोगों को मुसीबत में नहीं डालना चाहता, बस, ये कुछ घण्टे बीत जायें। सब खत्म हो गया, इंदु समझ लो, जो कुछ मैं कहता-करता रहा, सब बौद्धिक तमाशे थे, खैर, तुम मामा-मामी को बता देना और घबराना मत," वे जल्दी से अलग हो गए और तेज़ी से सड़क पार करके आगे बढ़ गये।"

उसकी छोटी बुआ के बेटे जवाहर साथ के कॉलेज में पढ़ाते थे और कॉलेज के बाद कॉफी हाउस में बैठकर दुनिया जहान की बातें करते थे। इंदु को उनकी बातें सुनना अच्छा लगता था। आज उनकी बातों से लगा, वे बुरी तरह लड़खड़ा गये थे।

वह गेट से लौटकर अन्दर आयी तो शमीम को कुर्सी पर बैठा पाया। "जवाहर भाई कल जा रहे हैं, शमीम। किसी ने चिट्ठी डाली है।" उसने साथ की कुर्सी पर बैठकर लम्बी सांस ली।

शमीम ने कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी-देर बाद कुर्सी से उठ गयी, "चलो उठो, मैं कल घर आ जाऊंगी।"

"नहीं, तुम वहां मत आना। वहां खाली मकानों में इन लोगों के अड्डे हैं। मैं ही आ जाऊंगी।"

इंदु घर पहुंची तो उसके नाम कई चिट्ठियां थीं। गाजियाबाद से उसके लेखक-दोस्त प्रदीप मेहरोत्रा का तार था, प्लीज़ वायर वैल्फेयर इमीजिएटली।"

उसने दूसरा लिफाफा खोला। मोतियों जैसे अक्षरों में प्रदीप ने लम्बा पत्र लिखा था शायद उसे इंदु का कोई पत्र नहीं मिला था और वह नाराज हो गया था। इंदु ने पढ़ा. "क्या यह हमेशा बहुत मुश्किल होता है कि समाज, इतिहास, राजनीति, साहित्य और तमाम बड़ी-बड़ी चीज़ों से एक पल के लिए अलग होकर किसी व्यक्ति, आदमी, दोस्त, रिश्ते को इन्सान सिर्फ इंसान की तरह महसूस करे—वैसे ही उससे पेश आये और एक छोटी-सी इंसानी फितरत (फिक्रो गम की) को आंखों से गिरने न दे?"

पत्र में प्रदीप यह मानकर चल रहा था कि इंदु जब भी कश्मीर छोड़ेगी, अपने परिवार के साथ सीधे गाजियाबाद चली आयेगी।

ऐसा झंझावात चल रहा था कि रिश्ते-नाते अपना अर्थ खो चुके थे, लेकिन दोस्तों के हाथ उसे थामने को तैयार थे। असरार, शमीम और अब प्रदीप मेहरोत्रा। उसे अचानक सुशील याद आया जो उसी के साथ पढ़ता था। इंदु के ग्रुप में सबसे बड़ा स्वप्नदर्शी शायद वही था और एक हद तक इंदु के प्रति आकर्षित भी कश्मीर से चले जाने के बाद वह भयानक रूप से आस्थावान हिंदू बन गया था। अब इंदु से ज्यादा कश्मीर में जलाये गये मन्दिरों की याद आती रहती थी।

वह बैठी यही सोच रही थी कि शकील दो-तीन लड़कों के साथ बाहर का दरवाजा खोलकर कमरे में चला आया। किशनलाल जी और इंदु की मां को आदाब कहकर वह बैठ गया। दोनों लड़के खड़े रहे।

शकील मुहल्ले के रिश्ते से उसका छोटा भाई था। पागलपन की हद तक पुरानी हिन्दी फिल्मों का शौकीन, इधर वह बंदूकधारी लड़कों के साथ उठने-बैठने लगा था और इंदु को उससे थोड़ा डर लगने लगा था।

"दीदी, आज मैंने तुम्हें बसन्त बाग़ से आते हुए देखा, तुम अकेली हिंदू लड़की थी, दीदी। मैं घबरा गया। अब तुम वहां से कालेज मत जाया करना। शार्टकट से चली जाओ, वहां सड़क के दोनों तरफ सी०आर०पी० खड़ी रहती है।"

इंदु मुस्करायी, उसने दोनों खूबसूरत लड़कों की तरफ देखा, "आप भी बैठ जाइए।"

"नहीं, हमें कहीं और जाना है। आप शकील की बड़ी बहन हैं तो हमारी भी बहन हुई। अगर कोई आपको तंग करे तो हमसे कहिए। हम साथ की गली से घूमते-टहलते हैं। जब तक हम जिंदा हैं, आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

वही कॉलेज के लड़कों का खास अन्दाज़ और अपने से कमजोर किसी भी आदमी को जान पर खेलकर बचा लेने का नायकत्व! ये लड़के इतने

खूंखार हो सकते हैं कि किसी का खून कर दे या बारूदी सुरंगें बिछाकर लोगों के परखच्चे उड़ा दें ? वह सोचती रही।

लम्बे लड़के ने जाने से पहले फिर इंदु की तरफ देखा, "यह तो हम ही जानते हैं हमारे साथ क्या हुआ। सारी स्टूडेंट लाइफ बरबाद हो गया।"

इन भोले-भाले खुशमिज़ाज लड़कों को किस तरह लोगों ने अपराधियों में बदल डाला था कितनी चालाकी से जुर्म किसी ने किया था और सज़ा किसी और को मिल रही थी।

उसे शकीला की बातें याद आ गयीं। उस दिन वह कॉलेज के किसी काम से आया तो इंदु ने आज़ादी की मांग को लेकर छेड़ दिया। शकील ने बड़ी संजीदगी से कहा, "देखो, दीदी इतना तो तय है कि न तो आप लोग पाकिस्तान में रह सकते हैं और न हम हिन्दुस्तान में रहने वाले हैं। आज़ादी हमारा हक है और हम लेकर रहेंगे।"

जिस तरह वह रटी हुई बात को दोहरा रहा था, इंदु को हंसी आ गयी। उसने बनावटी गंभीरता से कहा, "क्यों शकील ? जब कश्मीर पाकिस्तान बन जायेगा तो मुझे यहां से निकाल दोगे ?"

"तुम तो मेरी बहन हो।" वह बच्चों की तरह शरमाकर मुस्कराया।

टैगोर हॉल में जब आग लग गयी तो इंदु को लगा, हत्याओं और आतंक के बीच सांस्कृतिक केन्द्र के नष्ट होने पर मातम मनाना सबसे बड़ी बेशर्मी है। इसके बावजूद उसे वहां देखा एक एक सांस्कृतिक कार्यक्रम बार-बार याद आता रहा वजह यह थी कि यह कार्यक्रम उसने शमीम के साथ उस साल देखा था, जिस साल दोनों की नौकरी लगी थी।

पर्दा हटा और यामिनी कृष्णमूर्ति का नृत्य शुरू हो गया। दोनों पहली बार भारत नाट्यम देख रही थी। नवरस ! नृत्य-शृंगार रस से शुरू हुआ और चलता रहा। रौद्र रस ! यामिनी कृष्णमूर्ति की आंखें धधकने लगीं, शांत रस ! उन्होंने एक घुटना मंच पर टिका दिया और दोनों जुड़े हाथ सिर के बीच में रखकर आंखें बन्द कर ली। शांति की साक्षात् मूर्ति ! करुणा रस ! उसके चेहरे की एक-एक मांस-पेशी कांपने लगी। हास्य रस ! मंच पर खिल-खिलाहटें थिरकने लगीं।

इंदु मुग्ध हो गयी। तंग दायरा फैलाव में बदल गया और उसमें पंख फैलाये वह उड़ने लगी। भीतर रस के झरने उसी तरह बहने लगे जिस तरह कश्मीर के एक छोटे से गांव में वहां के झरनों का दूधिया पानी देखकर उस पानी को एक घूंट में पी डालने, उसके साथ एक रूप होने का मन हो गया था।

नृत्य खत्म होने के बाद दोनों बाहर निकलीं तो शमीम का चेहरा दमक रहा था, "मैंने ऐसी चीज़ कभी नहीं देखी थी इंदु, सच, कितना खो देती अगर आज न आती तो। कम्बख्तों ने हमारी दुनिया को अंधेरों में कैद करके रखा है। कभी कैमियत जकड़ लेती है तो कभी कश्मीरियत क्या बकवास है!" शमीम ने दांत पीसे, "यह नहीं सोचते कि अकेले आदमियों का वह समाज जिस कदर बीमार पड़ जायेगा।"

शमीम ठीक कहती थी, लेकिन इन जकड़नोंके बावजूद कोई न कोई बिंदु ऐसा निकल आता था जहां पहुंचकर सीमाओं के बंधन लुप्त हो जाते थे, दायरे फैल जाते थे और लोग खिंचकर एक-दूसरे के करीब चले जाते थे।

इंदु ने अपने घर में देखा था, किशनलाल जी खरीदकर पाकिस्तान का उर्दू साहित्य पढ़ते थे और वहां के शायरों की गजलें झूम-झूमकर सुनाते थे।

"इसीलिए तो आर्टिस्ट को हिस्टोरियन से बड़ा माना गया है।" असरार ने एक बार इसी के जवाब में कहा।

आजकल वह जब भी शमीम और असरार से मिलने जाती थी, वे तीनों अकसर इतिहास पर बहसें

करते रहते थे । सोवियत संघ के बिखराव से शुरू करके पीछे मुड़ते-मुड़ते वे फ्रांस की क्रान्ति तक चले जाते थे और फिर उस क्रांति में गिलोटीन का आतंक जिसकी कुल्हाड़ी अपने ही जन्मदाताओं को खा गयी ।

ऐसी ही एक बातचीत के दौरान इंदु ने असरार से कहा, "तुम्हें सफदर हाशमी याद हैं, असरार ?"

"याद कैसे नहीं होंगे ?" असरार ने चाय का बड़ा सा घूंट लेकर कहा ।

वे जब यूनिवर्सिटी में पढ़ते थे, सफदर हाशमी अंग्रेजी विभाग में पढ़ाते थे । यूनिवर्सिटी के बगीचों में सेब के पेड़ों के नीचे लड़के-लड़कियां खड़े या बैठे होते थे और अचानक सफदर हाशमी दूर से आते दिखाई देते थे । कुर्ता-पाजामा, लम्बे-लम्बे बाल, आंखों पर मोटा चश्मा, तीखी नाक और प्यार से मुस्कराता चेहरा ? बाएं कंधे से झोला लटकाये वे तेज कदमों से डिपार्टमेंट की तरफ जाने लगते थे । बड़े स्नेह और दोस्ती से मिलते थे । उन्हीं से उन लोगों ने पहली बार 'नुक्कड़ नाटक' का नाम सुना था ।

"मुझे आजकल अकसर सफदर हाशमी और पाश याद आते हैं । एक को हुक्मरानों ने खत्म करवा दिया, दूसरे को आतंकवादियों ने गोली मार दी, दो बड़े-बड़े खतरे टल गये ।" इंदु ने कहा ।

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया ।

"अच्छा ही हुआ, दोनों ही नहीं रहे ।" इंदु ने थोड़ी देर चुप रहकर कहा ।

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए ।" असरार ने ठक से चाय का प्याला प्लेट पर रख दिया ।

और क्या ? जैसी हालत है, इसमें तो वो दोनों भी हमारी तरह अच्छे शहरी बनने पर मजबूर हो गये होते ।" इंदु व्यंग्य से हंसी ।

"शटअप ! तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ।" असरार के चेहरे पर आवेश से हल्की लाली दौड़ गयी ।

"जानते हो, असरार ? मेरे लैक्चर वाहियात हो गये हैं, क्लास में किसी लड़की की तरफ देखने की हिम्मत नहीं होती । डर लगता है, कहीं मुंह से कुछ ऐसा-वैसा निकल गया तो किसी लड़की का भाई या रिश्तेदार मुझे गोली मार देगा या उठाकर ले जायेगा । यह मुझे क्या हो गया है, असरार" उसने दायां हाथ अपनी आंखों पर रख लिया और फूट-फूट कर रोने लगी ।

"कुछ नहीं हुआ, इंदु, तुम्हें सिर्फ माइनोरिटी की गांठ परेशान कर रही है । शमीम तुम्हारे साथ काम नहीं करती ? मैं ऑफिस नहीं जाता ? तुम कई बार कह चुकी हो कि फासिज्म सिर्फ फासिज्म होता है ।" असरार ने कहा ।

"मैं क्या करूं ? वह रोती रही ।"

"इन्तज़ार करो सब ठीक हो जायेगा । तुम खुद ही तो कहती हो कि आम आदमी फितरतन अच्छा है । हिस्ट्री से हवाले देती रहती हो कि फासिज्म खत्म होकर ही रहता है ।"

हिस्ट्री । उसके इतिहास, उसके ज्ञान और उसके शोध की ज़रूरत किसी को नहीं थी । हर आदमी के पास अपना-अपना मायादर्पण था जिसमें कोई अपने बीते दिनों की महानता और कुलीनता के टूटे-बिखरे अक्स देखता था तो किसी को दूर के रेगिस्तानों में चमकती जिहादी शमशीरें नज़र आती थीं । अपना आप उसे निरर्थक लगा ।

'इतना तय है कि कश्मीर अब मेरा होमलैंड नहीं रहा।'' उसने आंसू पोंछकर कहा।

''तुम्हें कश्मीर से जाने के बाद भी सुकून नहीं मिलेगा, मेरी बात गांठ बांध लो। यहां मुल्ला है तो वहां मन्दिर का महन्त होगा।'' असरार ने गंभीरता से कहा।

शमीम उठकर उसम पास बैठ गयी और अपनी दाईं बांह से उसके दोनों कन्धों को घेर लिया उसके स्पर्श में दोस्ती के सोते झर रहे थे।

वह लौटने लगी तो शमीम उसके साथ बाहर तक चली आयी। दरवाजे पर पहुंचकर वह खड़ी हो गयी, ''जानती हो न इंदु? क्या कहते हैं लोग, पहले हमारी लाश गिरेगी तब आपका बाल बांका होगा। कितनी मक्कारी! तुम इतना ही याद रखना कि जो कुछ हो रहा है उसमें तुम अकेली नहीं हो।''

इंदु ने उसकी तरफ देखा। शमीम की आखों में तरल चमक थी।

वह घर लौट गयी।

मुहल्ले में बूढ़ा इस्माइल अपनी जगह बैठा भुट्टे भून रहा था और धुएं के मारे आंखों से बहते पानी को उल्टे हाथ से लगातार पोंछ रहा था। उसने एक भुट्टा लिया और अपनी गली में मुड़ गयी।

लगता था, गली मीठी नींद में सो रही है। यहां वो लोग रहते थे जो बड़ी जल्दी तैश में आकर मरने-मारने को तैयार हो जाते थे और जुनून उतर जाने के बाद फ़िर से सीधे-साधे आदमी बन जाते थे।

वह आगे बढ़ने लगी—

नल पर शकील हाथ-पांव धो रहा था। इंदु को देखकर वह जोशीली आवाज़ में बोला, 'जानती हो, दीदी? आज टी०वी० पर पुरानी फिलम आ रही है 'मेरे महबूब'। तुम्हें याद है जब साधना की किताबें गिर जाती है और राजेन्द्र कुमार उन्हें उठा लेता है?''

आज़ादी पर भाषण झाड़ने वाले शकील के भीतर से कॉलेज का भोला-भाला रोमांटिक लड़का निकल आया। पढ़ाई-लिखाई में ठस्स लेकिन ज़िंदगी से भरपूर! इंदु को अच्छा लगा।

''अच्छा, जाओ फिलम का टाइम हो रहा है।'' उसने स्नेह से कहा।

शकील ने पानी की भरपूर अंजुरी मुंह पर मारी और घर की तरफ बढ़ गया।

शाम की ढलती धूप में चारों तरफ खड़े पहाड़ों की चोटियां दिप-दिप कर रही थी।

०००

(महिला कालेज मौलाना आज़ाद रोड, श्रीनगर।)

□ मोतीलाल बंगरू, "चानक"

'यह कैसी विडम्बना बनी'

कैसी आंधी बही ?
जिसने ध्वस्त कर दिया मानवता को,
सेज पर सुप्त शैशव मसल दिया गया,
इतिहास चीत्कार कर उठा,
एक सभ्य-भद्र-शिष्ट जाति-
राक्षसत्व के वीभत्स हाथों से—
एक ओर धकेल दी गई,
फेंक दी गई, गृह-द्वार से बाहिर,

यह कैसी विडम्बना ?
यह कैसी विडम्बना ?

साधिकार प्रश्न कर रहा है,
कल्हण का साहित्य,
कैयय्ट-मम्मट का इतिहास,
कितना ही प्रहार क्यों न हो ?
कितना ही कुठाराघात क्यों न हो ?
कितना ही क्यों न हो ?

वम-वर्षण,
पवि-पतन,

हम जानते हैं कि भिक्षा की झोली में
डाले हैं किसी विस्तारवादी ने,
कट्टरवादी देश की परम्परा में कुछ अस्त्र,
जो हमारे विरुद्ध प्रयुक्त हो रहे हैं,
गहन दुरभि-सन्धि में प्राप्त हुए हैं,
किसी दानव को शस्त्र,

परन्तु,
क्या ये सभी हमें असम्बद्ध कर सकते हैं,
'राजतरंगिनी' की गरिमा से,

'वितस्ता' की महिमा से,
पर, आह सम्प्रति में क्यों ?
यौवन दलदल में उलझा है,
यह कैसी विडम्बना ?
यह कैसी विडम्बना ?
मानवाधिकार का प्रश्न रिक्त-रिक्त-सा है,
स्वार्थ की परिभाषाओं से घिरा,
इतिहास की मसि क्या पांच-छः वर्षों,
में ही सूखेगो ?
लाखों की संख्या में किसी सभ्य जाति को,
निर्वासन-विस्थापन के कगार पर,
फेंका गया,
पर, मानवाधिकारी कुछ न कह पाये,
वे निरीह, पीड़ित शोषित, निर्वासिन,
जाति के प्रति,
समर्थन के दो शब्द भी व्यक्त न कर सके,
यह कैसी विडम्बना ?
यह कैसी विडम्बना ?
इतिहास मुर्झा तो जाता है,
पर, मरता नहीं है,
जीवन उलझा सकता है,
पर इस उलझन से मुक्त भी हो सकता है,
अत्याचार की रजनी बीत जायेगी,
तिमिर अवश्य ढलेगा,
कुसुम अवश्य खिलेगा,
हम क्योंकि सम्प्रति की बात ही करे,
इन दिनों कुहासा हम सब को,
घेर रहा है,
यह कैसी विडम्बना ?
यह कैसी विडम्बना ?

(201/सी, रामविहार, जानीपुर, जम्म

□ मोहिनी देवा

ठूंठ

क्यों भई आम के पेड़, तुम मुझ पर इतना क्यों हंस रहे हो ? कभी मैं भी तुम्हारी तरह हरा-भरा और गदराया हुआ था। मैं भी खुश था अपनी जवानी पर। क्या तुम वह दिन भूल गये जब मैंने अपने बगल में तुम्हें जगह दी थी। उस दिन तुम ज़रा से तीन पत्ते लेकर और आम की गुठली में जड़ छिपा कर मेरे पास आये थे, और मैंने तुझे अपनी छत्रछाया में पनपने दिया था। मैं भी कितना खुश था तुम नन्हें से पेड़ को देख कर। तुम्हें हर साल बढ़ता देख कर मुझे कितना सुख मिलता था। मैं सोचता था तुम बड़े होकर, मेरे बराबर में खड़े होकर दोस्त की तरह दोस्ती निभाओगे। याद है तुम्हें जब तुम्हारी शाखें पहली बार आम के बौर से लद गई थी। तुम्हारे लिये यह पहला बसन्त था। कोयल पहली बार तुम्हारे शाखों पर झूलती हुई कूकी थी। उस मीठी तान को तो मैं आज तक नहीं भूला हूं है आज मैं बूढ़ा हो गया हूं तुम मुझे नफरत करने लगे हो, लेकिन मैं तुम्हें वही प्यार देता हूं जो शुरू से तुम्हारे लिये था। तुम्हारी वह छोटी-2 अम्बियों से लदी शाखें आज भी याद आ रही किस कद्र झुक रही थीं और मैं खुश हो रहा था, तुम्हें फलते-फूलते देख कर। तुम्हें हमेशा आशीर्वाद देता रहा—इसी तरह हर वर्ष फलो-फूलो।

स्कूल से आते हुये बच्चे तुम्हें ललचाई आंखों से देखते थे। तुम्हें पत्थर मारने लगते थे तो मैं अपनी शाखों से तुम्हें बचाने का प्रयत्न करता था क्योंकि मैं तुमसे बड़ा था मैं नहीं चाहता था तुम्हें कोई चोट पहुंचाये। हम चांदनी रातों में आपस में सुख-दुःख की बातें करते थे मैं अपने जीवन के अनुभव तुम्हें सुनाता था और तुम ध्यान से सुनते थे। वर्षा गर्मी सर्दी सबको तो हमने इकट्ठे ही सहन किया। फिर आज तुम क्यों मुझ पर हंस रहे हो। तुम्हारा भी कोई दोष नहीं.. समय के साथ-2 मैं बूढ़ा हो चला मेरी हरियाली समाप्त हो गई। मेरा शरीर अशक्त हो गया शाखें सूखने लगी। क्या करूं समय ने मेरा रूप ही बदल डाला। आज तुम्हारे सामने ठूंठ खड़ा हूं। इधर से हर गुजरने वाला मेरा भद्दा रूप देख कर हंसता है। और मेरी सूखी टहनी तोड़कर ले जाता है कोई इंधन के लिये तो कोई अपनी भेड़-बकरियों को चराने के लिये छड़ी बनाता है। आखिर सबका रूप एक दिन ऐसा ही होगा। किसी की जवानी अन्त तक साथ नहीं देती है। हमारा क्या ? पूरे संसार का यही हाल है। मनुष्य अपनी जवानी पर इतराता है। उसको लगता है मुझ जैसा बलवान कोई नहीं है लेकिन उसका भी यही हाल एक दिन होता है। पहले वह सांसारिक कार्यकलाप में. बच्चों में व्यस्त रहता है।

बच्चे ठीक हमारी शाखों की तरह पत्तों की तरह एक दिन अलग हो जाते हैं, और पीछे रह जाते हैं मुझ जैसे ठूंट मां बाप। मैंने कई सालों से यहीं पर खड़े होकर कितने ही घर बसंत और उजड़ते देखे हैं। सब का यही हाल हो गया। जीर्ण-शीर्ण शरीर को खींचकर चलाने वाला जीव एक दिन मेरी तरह टूट जाता है और सो जाता है चिर निद्रा में। मेरे मित्र अधिक इतराना ठीक नहीं। तुम्हारी यह आम की बौर एक दिन सूख जायेगी पत्ते गिर जायेंगे। पपीहा तो क्या कौआ भी पास नहीं फटकेगा और पीछे रह जाओगे मुझ जैसे ही ठूंठ। अकेला बेसहारा ठूंठ। बस ठूंठ। (जानीपोर, जम्मू)

●

□ शीला कृष्ण कौल

चाह है वीर सन्तानों की

हम को यह उनके जुल्म ने कैसा बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥

देख के कश्मीर का ऐसा बुरा हाल।
था वह कितना प्यारा और था वह बेमिसाल॥
बेकार लोगों ने इसे ऐसा बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥

हम को यह उनके जुल्म ने कैसा बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥

इन्द्रा कहां बापू कहां कहां जवाहरलाल।
क्या कहें कैसे कहें किसे करे सवाल॥
मेरे देश को क्यों एक समस्या बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥

हमको यह उनके जुल्म ने कैसा बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥
पता चला जब हमें फैलाया उन्होंने है जाल।
चुप रहा भारत देश चला वह अपनी चाल॥
साकार समझने वालों का सपना बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥

हम को यह उनके जुल्म ने कैसा बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥

एक वीर भारतवासी ने किया ऐसा कमाल।
फहराया तिरंगा बीच में किया उन्हें बेहाल॥
ऐसा किया किया कि उसने उन्हें पागल बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥

हम को यह उनके जुलम ने कैसा बना दिया।
मेरा देश लेने आए तमाशा बना दिया॥

सच्चा देशवासी है वह सच्चा मां का लाल।
प्रार्थना है आयु बड़े उसकी लाखों साल॥
उसने ही मेरे प्यारों को उनसे बचा लिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया।

हम को यह उनके जुलम ने कैसा बना दिया।
मेरा देश लेने आये तमाशा बना दिया॥
हम को यह उनके जुलम ने।

(ह्यूस्टन, यू० एस० ए०)

चिट्ठी-पत्री

स्तरीय पत्रिका

महोदय,

'कश्यप' का गत अंक देखने का सुअवसर उपलब्ध हुआ। देख रहा हूं कि यह एक स्तरीय पत्रिका है तथा 'श्री रतन लाल जी 'शान्त', के निष्पक्ष, नि:स्वार्थ तथा योग्य सम्पादन में यह पत्रिका उत्तरोत्तर उन्नत हो रही है। मेरी शुभ कामनायें आप सबके प्रति हैं। विशेषकर हिन्दी की सेवा जो इस पत्रिका के द्वारा हो रही है, उसके लिए हिन्दी प्रेमी तथा जाति के सेवक आपके आभारी हैं।

मोतीलाल बंगरू 'चातक'
201/C रामविहार, जानीपुर
(जम्मू)

"अका'य लिपी"

सम्पादक जी,

कश्मीरी के लिए नागरी लिपि को एक विकल्प की लिपि बनाने के लिए आप जितना प्रयास कर रहे हैं, उससे साफ जाहिर है कि इस बारे में आप कितने चिंतित हैं। अक्तूबर 1995 के अंक में आपने फिर एक बार "अका'य लिपी" शीर्षक के अन्तर्गत इस पर अपने विचार प्रकट किए हैं। मुझे आपका यह विचार सही लगता है कि जो भी लिपि सर्व-स्वीकार्य हो वह का'शुर समाचार के अर्धचन्द्र (ॅ) और क्षीरभवानी पत्रिका के अपॉस्ट्राफी (—') दोनों पर आधारित हो। आपका दिया हुआ लिपि संकेत मुझे सर्वथा उचित लगता है। मैं "कॉशुर समाचार" के सम्पादक से भी प्रार्थना करता हूं कि वे जल्दी से इस दिशा में कोई कदम उठाएं।

—रोशन लाल कौल
गांधी नगर, जम्मू।

खीर भवानी

(1)

महोदय,

'खीर भवानी टाइम्स' के लिए धन्यवाद। इस से हमें अपने महान तीर्थ खीर भवानी की स्मृतियां बनी रहेंगी। खीरभवानी से हम यहां जम्मू में भी जुड़े रहेंगे। हमारी बधाई स्वीकार करें।

—काशीनाथ भट्ट
मिश्रीवाला, जम्मू।

(2)

सम्पादक महोदय,

पत्रिका के नए नामकरण में कोई बुराई नहीं। पर यह तो सोचना चाहिए कि 'टाइम्स' किसी दैनिक या साप्ताहिक पत्रिका का नाम हो सकता है, मासिक का नहीं। फिर यह कोई समाचारपत्र भी तो नहीं। बेहतर होगा कि आप यह शब्द छोड़ ही दें। "खीरभवानी" काफी है।

—तेजकृष्ण थपलू
जानीपोर, जम्मू।

(3)

प्रिय सम्पादक जी,

आपने सभा की पत्रिका को नया नाम दिया है यह ठीक है। लेकिन नाम जो आपने चुना है, ठीक नहीं है। आखिर यह कोई धार्मिक पत्रिका नहीं। यह एक सांस्कृतिक और साहित्यिक पत्रिका है। यह भी तो खयाल रखना चाहिए था। आप कोशिश तो करते हैं कि इसका सांस्कृतिक रूप बना रहे। अपने इस की साहित्यिकता भी बनाए रखी है तो फिर यह नाम क्यों?

—संजीव रैना
सुभाष नगर, जम्मू।

खीर भवानी टाइम्स (का'शुर बोग)

का'शुर परनुक लेखनुक त'रीकु'

का'शिरि आवाज़ु'

1. स्वर :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ। अ'=च'र, म्य'च। आ'=आ'र, नसा', चा'र। उ'=बु', चु',
वतु' ऊ=ऊ'ठ्युम, तू'र, कू'त्य्। ए'=मे', चे', वे'ह। ओ'=ओ'ड, नो'ट। —य्=तीत्य्,
म्या'न्य्, आ'द्य्। —व=व्वश, स्वछ, क्वस।

2. व्यंजन :

क, ख, ग, च, च़, छ, छ़, ज, ज़, ट, ठ, ड, त, थ, द, न, प, फ, ब, म, य, र, ल, व, श, स, ह, त्र।

3. हिंदीयिक्य् व्यंजन घ, झ, ढ, ध, भ, ण, ष, क्ष, ज्ञ करव अ'स्य् सिरिफ नावन (व्यक्तीवाचक संग्यायन मंज़ इस्तिमाल) हिंदीयिक्य् अलावु' स्वर ऐ, औ ऋ ति यियय पा'ठ्य्। मसलन, घनश्याम कृष्ण, ढाका, धनवती, नारायण, ज्ञानेश्वर ऋषिकेश, मैनावती।

सम्पादकी

त्राहि ! त्राहि !!

ज़िंदगी छे' केंच़न मरहलन हुंद मिलु'मिशि सफ़र। ज़्यनु'पतु' पालन' प्यतरु'नु' युन, मा'लिस माजि हुं'ज़ि वुशनि क्वछि मंज़ फ'र्य'फाह प्रा'विथ, वां'लिसि वस तु' रगन हुंद रथ गलि गलि तु' दामु' दामु' चा'विथ बो'ड वातु'नावुन, मीलि कलमु' कड्'न, प'लव प्वशाक, फीस, किताबु' कागज, ख्यन चन तु' क्याह क्याह नु' छु मोल मा'ज अ'मिस ये'छ्'यमु'तिस तु' का'छंमुतिस अवलादस खा'तरु' करान। पातु' फाकु' फरि रूज़िथ, द्वहस रातस मे'हनत मो'ज़ूर्य् क'रिथ अ'मिस अवलादस रथ वंदान, बलायि लगान, छायन तु' ग्रायन वुछान, सुवान कपटान तु लवलु'मतु' लायिकराना अ'छ प्यठ नु' म'छ ज़ु'र्वान। कमन् आरामन लथ दिवान तु' यिहन्ति बापथ पनु'न्यन अर्मानन कारिवुठन दिथ पनु'न्यन तमु'हन तु' खा'हिशन ह'ट्यग्र'डंम दिवान—आश छख आसान ज़ि ये'लि बुजरस म'ज़ क़ठि प्यन तु' अवलाद लागि यिमन डखु'वु'नि लोरि हुं'द्य् पा'ठ्य् हमर्दद — निक्याजि बुडुन छु प्रथ का'सि — यिछु ज़िंदगी हुंद आ'खरी मरहलु' — ये'लि आसु'रन तु' सहारन हुं'ज़ ज़ो'रूरथ छे' महसूस सपदान—मगर अकि द्वह' वुछ मे' तु' म्यान्यव मे'त्रव अख म'र्यद्यादु'म ज़ूर्या अख शाम वक्तन अ'किस कोचिग'लिस प्यठ इस्तादु' वदान तु' व्यलाफ करान तु' वति पकु'वु'न्यन ज़ा'री करान युथ ज़न कांछाह तिमन कुनि मंदरसय आश्रमस मंज़ वातु'नाविथ तिहंदि ख़ा'तरु' ज़िंदगी हुं'द्य् बाकु'य द्वह गुज़रावनु'च जाय फराहम करिहे असि गव ज़रु' ज़रु' ये'लि यिहुन्द हाल वुछ तु' तमि पतु' पे'यि असमानु' ये'लि असि तिम गीता भवन वातु'ना'विथ समती वाल्यन हुं'दि द'स्य् तिहुं'दि रोज़नुक तु' ख्यन चनुक इन्तिज़ाम को'र—पतु'नन्यव ज़ि तिमन हुन्द न'चुव तु' न्वश छि बारस्तु' तु' स्वखालु' पनु'निस मकानस मंज़ आ'शाह अशरथा करान—दो'प तमि माजि अ'छव खून हारान ज़ि तिहिंद्य् साहिबज़ादन अ'न्य् मोटरकार तु' थ'वु'न गराजस मज़' मगर यिम बुज़र्ग मोल मा'ज छु'निख गरु' मंजु' क'डिथ युथनु' तिहुं'ज़ छायी पे'यिख — तो'ह्य ति करिव त्राहि त्राहि—यी लो'बा असि तु' अ छन गव पचि प्यूर पा'र्यज़ानु'य, रा'व — अध्य् स'विव तु' क'यिव क्याह छुज़ा'पितु'। —पुनासा•

□ अवतार कृष्ण राज़दान

'माजि हु'द्यं व्यदाख'

ब' ! म्योन वो'जूद ! अस्तित्व ! अम्युक नामु' निशानु' मिटावनस प्यठ छि सा'री ज़नतु' पतय । म्योन नाव छु सा'र्य'सु'य दुनियहस मंज़ बदनाम तु' बज़गार यिवान करनु' । म्या'न्य् वछि कुबु', ट्वपु'तन, रगन-रगन मंज़ दोरु' करु'वुन यि सफेद रथ तु' यि सोरुय सब्ज़ मखम'ली पलु'वन मंज़ व'लिथ, यिमन प्यठ टेकु'बटन्य्, हिय तु' क्वंगु'पोशुक स'तरेर छु ब्यो'न-ब्यो'न मोसिमन मंज़ लबनु'यिवान, छुयिमन खरान । खबर क्याज़ि ? ति छुनु' मे'ति तरान फिक्री, ये'लिज़न बाकु'य म्योन यि रोय वुछिथ म'त्य् छि गछ़ान । बु' छस यिथु' क'न्य् मंदु'छावनु' यिवान तु' व्वन्य् छु मे' बासान ज़ि म्योन तस'वुर छु ह्यवान हनि हनि प्र'च् बनु न । शाह आ'सिथ छुम पनुन पान बासान गदाह । अज़ छि सा'री म्योन नाव ह्यनु' खोच़ान, ये'लि ज़न अज़ ब्रोंह के'हं व'री सा'री म्या'न्य् द्रु'य आ'स्य करान । यि क्याह सना गव मे' हंगतु'मंगु' ? म्योन यि नूरु'बो'रुत रोय क्याज़ि गव वुछान वुछान बदसूरत ? मे' क्याज़ि फ'र्य् पनु'नी पनु'निस गरस ? वुछि द'छुन तु' छुम शेंकान अख ह्यव तु' वुछि खोवुर तु' छुम ब्याख ह्यव ज़नतु' ज़ागान । द्रशवु'न्य् हु'द्यं कलु' ठासु'न्य् तु' पानु'वा'न्य् मारु'मारय वुछिथ छस बु' का'पेमु'च् । यि हाल छु व्वनय् यथ हदस ताम ज़ि व्वन्य् छें' मे' पविह्वगाड़ ह्यवान गछ़ु'न्य् । कति स्व म्यान्य् ट्वपु'तन ज़नतु' सा'दु'रवार गाडय्वसु' आ'नु' हिवि पामि म'ज्य् नाज़ल ब'निथ वुछन वाल्यून ब्रो'मरावान आ'स तु' कति व्वन्य् स्वय गाड ज़नतु' तीलु'क्रायि मंज़तलनु' यिवान । न छुम ओर वुछनसवार तु' न योर । मंज़ बाग ज़नतु' छस शिगनेमुच् । को'त ग'यि ति द्वह ये'लि ज़न म्योन नूरु'बो'रुत जलवु' वुछनु' बापथ् आशक कोह'तेंता'ल्य् छ्'डिथ मे' निश आ'स्य् यिवान ! अदु' बु'ति आ'सु'सख लालु'न्य् ललु'वु'न्य करान पनु'निस वछि वुशनेरस मंज़ । करहा'ख ना ? आ'स्य् ना तथ लायक । तिम छि तु' रोजन ति मे' वुछान अकि जो'महूर्य्यतुक ताज । महरे'नि हु'द नपु'-नपु' करु'वुन ड्यकु' टिकु' । बु' आ'सु'स दे'दि हु'द्य् पा'ठ्य् दाय तु' तदबीर दिवान । मगर अज़ छिख त'स्य् दे'दि ज़'द्य् क'र्यमु'त्य् । फ़खु'र ओसुम म्यानि क्वछि मंज़ छु का'त्यहव रे'शव ज़न्म ह्यो'तमुत । मगर तिहु'ज़न कबरन ति क'रु'ख़ वेहुरम'ती तु' तिहु'ज़न ज़िधारतन ह्यतुख नार । म्या'निस वछि वुशनेरस मंज़ फा'फलेयि का'त्य ह फ़लसफ़ु' । म्यान्यव गो'बख व चव विज़ि विज़ि यिहुंद मो'दुर म । मगर अज़ छिम फ'र्य्मु'त्य् पनु'निसु'य गरसच्'र । पनु'न्यवु'य शुर्यव छिहस अज़ ज़'र तु' क'ज क'रमु'च् । वनु'नस छुहमनु' वार थो'वमुत । अज़ छुम पनु'न्यन तिमन अवलादन हुंद लोल आमुत । यिम ज़न "सूहमसू" परान आ'स्य् । बोज़ान छस तिम छिम अ'शि प्यठु' फ़र्शस प्यठ बिहिथ । बयाबानन मंज़ तापु' क्रायि दज़ान । बिचव तु' सर्फ़' ट्वपव सू'न्य् वारयाह

मूख्‌मु'स्य्‌ । का'स्याह्‌ से'ष्रसादु' मनोश आ'स्य्‌ तिम ! यिमन नु' मोंड श्राकु'पुच गरस मंज़ ओस । तिमय आयि वतन प्यठ मारनु', फांसिकूट्यन खारनु' । मगर यि सिलाह-सामानु' कति ओ'न यिमव स्यान्यव गो'बरव ? मर्द तु' ज़न गिलु'त्रिथ निन्य्‌, बाम तु' ग्रिनेड फाटु'वु'न्य्‌, बे'ग्वनहन प्यठ गोलि चलावनि । मकानु', सकूल तु' क'दु'ल ज़ालु'न्य्‌ । बन्दूकु' न'ल्य्‌ हा'विथ बे'ग्वनाह लूख नाकारु' कामि करु'नावु'न्य्‌ । लूकन हु'द्यन दिलन मंज़ दहशत तु' वसु'वसु' पा'दु' करुन । क़ोनून ओ'क तरफ़ त्रा'विथ पनुन कचुल बाह त्रख करुन । बासान छुम यि छे'नु' यिहु'ज़ का'म । अथ पसिपुश छे' क्वसु' ताम वतिरा'वमु'च्‌ मा'ज यिमन यि करनावनस प्यठ मजबूर करान । स्व छे' मे' दो'यम्यन अथि कु'नु'नावुन यछ़ान । मे' प्यठ प्यठोवुली करनावु'न्य्‌ यछ़ान, मगर यि मा छस पताह्‌ ज़ि यिमन स्व बन्दूक तु' गोल्यन हुंद को'छ दिथ वरगु'लावान छे' तिमव छु स्यान्यन बबन हुंद द्रद चोमुत । तिम छिनु' का'सि हु'द्य, तिम छि स्या'न्य्‌ । सिरिफ स्या'न्य्‌ स्यानि तनि द्रतु'-द्रतु' करुन छुनु' तिमन कांह ति हक । अलबतु' छु मे' तिमन मंज़ तिम अना'सिर मे'चि सू'त्य्‌ मिलु'नावनुक हक़ यिम स्योन वो'जूद खत्म करनस पतु' छि ल'ग्य्‌मु'त्य्‌ । यथ कुलिस नु' शे'हजार क'र्य्‌ ज़ि, तथ कुलिस टख द्युनगव सवाब । मे' छे' पूरु' व्वमेद ज़ि तिम द्रह यिन ज़ो'रूर वापस ये'लि स्यानि तनि प्यठ प्रा'न्य्‌ पा'ठ्य्‌ सबज़ार खसि । नागु' ज़्वयि वुज़न, बन्दु' च़लि, शीन गलि, बे'यि यियि बहार ।

68/3, त्रिकूटानगर,
जम्मू—180012

Donations Received during Nov. *1995*

1.	Ashtami Mandli	300
2.	Sh S. N. Bakaya	100
3.	Smt. Nirmal Davi	300
4.	On spot donation by K. P. Sabha members	623
		1323

□ प्रेमनाथ कौल "अर्पन"

म्योन माता पिता, म्योन जीवन प्रबू

(अर्पन सा'ब छि सानि बुज़र्ग पीरि हुंद्य् अख अहम ब'ख्ती शा'यिर। यिम छि बिज़ा'ती बुगाम क्वलगा/मु'क्य् रोज़नवा'ल्य् तु' हालस छि मुठी, जेमि रोजान। यिहंज़ि शा'यरी मंज़ छि असि परमानंद तु' कृष्णजू राजदानुन ह्यू मेछर तु' रसूल मीरु'न्य हिश मस्ती द्रें'ठ गछ़ार। यिहंदि वननु' छु युहुंद अख गज़ल। ब्वश यिवुन नु'दु'बेन वेसिये म्योन दिलबर आवनय) रसूलमीरस कुन मनसूब ग'छ़िथ प्रचारित करनु'आमुत। यिहंज़ब रचनायब मंज़ छु भगवद्गीतायि हुंद का'शुर गीतमय अनुवाद बडु' अहम। अमि अनुवादु'क्य् केंह नमूनु' करव अ'स्य् न'विस अंकस मंज़ पेश।)

तन प्रबू, मन प्रबू, अन प्रबू, दन प्रबू ।
बखति बावय करय प्रान अर्पन प्रबू ॥
तन प्रबू, मन प्रबू, अन प्रबू, दन प्रबू ॥

चु'य मे' नरि जंगु' छुख, चु'य्य में' अंगु' अंगु'छुख ।
चु'य में' रंगु' रंगु' छुख मंगु'नावन प्रबू ॥
तन प्रबू, मन प्रबू, अन प्रबू, दन प्रबू ॥

चालु' का'त्याह सितम, क्याह च' सनम्बख यितम ।
ज़ानु'नस कित्य् दितम ग्यानु' लुच़न प्रबू ॥
तन प्रबू, मन प्रबु, अन प्रबू, दन प्रबू ॥

बे कसो बे नवा, कुस मे' छुम च' सिवा ।
चु'य मे' दाद्यन दवा चु'य मे' हनहन प्रबू ॥
तन प्रबू, मन प्रबू, अन प्रदू, दन प्रबू ॥

छुखनु' कुनि निशि जुदा, छुयनु' कुनिकुय मुदा ।
छुख चु' ब'खत्य्न सदा क्रश्टु' कासन प्रबू ॥
तन प्रबू, मन प्रबू, अन प्रबू, दन प्रबू ॥

ही प्रबू छुमनु' ग्यान छुस ब' बालुक अज़ान ।
छुस बु' श्रदायिसान ध्यान दारन प्रबू ॥
तन प्रबू, मन प्रबू, अन प्रबू, दन प्रबू ॥

चाम्य् सथ छम मे' बस ब्वन्ये चे' रो'स बावु' कस ।
चा'वतन प्रेयमु' मस पोनु' अर्पन प्रबू ॥
तन प्रबू, मन प्रबू, अन प्रबू, दन प्रबू ॥ □

□ "गाशा जी"

आनन्द वथ

(देवनागरी लिपी मंज़ का'शुर लेखनु' सूत्य् य्वद ज़न सान्यन र्वा'यती तु' बुज़र्गशा'यिरन रछा ध्वस ति आयि तु' तिम छि असि फारसी खतस मंज़ पनु'न्य् तखलीक सोज़ान, अमापो'ज़ सान्यन नव्यन शा'यिरन, यिमन हिन्दी तु' नागरी ज्यादा व्य'ज़ छे', आयि वथ हिश । सबूत छु यि नज्म । ''गाशा जी'' छु ये'मिस बछि़ वां'लिजि तु' जोशि किन्य् शाद वनन वा'लिस शा'यिरस गर्यु'क नाव । यि नज्म छे' यिहुंज़ ग्वडनिच कूशिश । व्वमेद छि सा'न्य् बे'यि बाकय होशि सो'स्य् दोस ति निन ये'मि निश प्रेरना तु' बे'शू'क्य् पा'ठ्य् लेखन यि मनस बुज्यख ति ।)

छानस वो'नुम नावा ग'र्य्'ज़े
ग'य्ज़े ज़ा'विजि तूरे सू'त्य्
अं'द्य् अं'द्य् म्वखतुक्य' जालाए ला'ग्य्ज्यस
त्रा'व्य्ज्यन व्यतसतायि मंज़ ऊर्य्
श'ठिस प्यठ बिहिथ नज़रा था'व्य्ज्यस
वह्य् वह्य् कूताह यिवान ग्यूर
वठ्यन तु' ठठ्यन ल'ग्य् ल'ग्य् थ'किथ
छे'ल्य् छेल्य् छे' प्यवान छलि छलि ऊर्य्
अ'थ्य् मंज़ आबलुन मिलविथ छु वालान
दम दिथ छुस बे'यि धावान ऊर्य्
कुनि विजि ह्यो'र कुन वकु' छुस दिवान
ट्वकु'सूर ग'छिथ बे'यि लिथवान ऊर्य्
योरान यीरान शाठस छि लागान
य्वदु'वय ज़ा'ह काल्य् तिछ़ जु'थ आयस
मियस पानस सू'ती ऊर्य्
व्वथ पानु' ढिस ते'लि फे'कि पे'ठ्य् वज़राह
थर दिस मा तुल पानस ग्यूर
बो'ठ त्राव ह्यो'र खस दि नज़ए बाज़रस
वुछ किथु' छय वुछान स्वंदर हूर
नतु' बे'ह दम दिथ श्रम वूर अं'दरु'य
नम रठ वथ कड आनन्द पूर ॥ □

(24, लोवर लक्ष्मीनगर
सरवाल जम्मू ।)

पृथ्वी नाथ कौल "सायिल"

ज़ुवलज' तु' बे'यि क्याह !

('दस्तावेज़' शीर्शकस तल क'र्य् असि वुनिस ताम ज़ु' मज़मून छाप । रत्नलाल 'जौहर' सा'बन क'र कल्चरल एकेडेमी तु' 'शीराज़ा' (का'शुर) हुक 'हा'ज़नी नंबर" ज़ेरि नज़र थ'विथ कें'चन का शिर्यन अ'दीबन हुं'ज़ि तंग नज़री तु' 'बे अदबी" तनकीद । मोतीलाल साकी सा'बन को'र साफ तु' बेखोफी सान बयान ज़ि तिमन क्याज़ि तु' कमन हालातन मंज़ प्यव क'शीरि प्यठु' चलुन । व्वन्य् छु यि त्रे'युम मज़मून पेश । यथ मंज़ छु सा'यिल सा'बन तिमन हकीकतन पर्दु' तुलमुत यिमु' आम पा'ठ्य नज़र अंदाज़ करनु' यिवान छे' ।

अ'स्य् छि बे'यि पनन्यन ज़ीह्यस तु' होशमंद लेखन वाल्यन तु' आम परन वाल्यन प्रार्थना करान ज़ि तिम ति सूज़िन असि तिमन हालातन प्यठ कमज्यादु' सफु' ज़ु' सफ़ु' लीखिथ, यि मव किन्य् तिमन गरु' त्रावुन प्यथ । ज़रूरथ छु ज़ि यिम हालाथ यिन रिकाड करनु' युथ न' सान्यन दुश्मनन हुंदयि अपुज़, पो'ज़ यिथि माननु', ज़ि बटु' आयिकमि तान्य् लालचु' या कथ तान्य् सा'ज़िशि तहतगरु' त्रा'विथ योर जो'म । —रलश०

सडकि प्यठ मकानु' आसुन ये'ति वारयाहव अंदव रुत छु तति छु कें'हव अंदव नाकारु'ति । जनव'रो हुंद र्‌यथ ओस । व'दुक तू'रि कठकार ओस । शाम वक्तन ओस्य सा'री दारि बर त्रो'परिथ छ़ू'पु' ड्रपु' क'रिथ अंदर कुन बिहिथ । हंगतु मंगु गेव बो'ड जो'लूसा ज़ा'हिर । कें'ह छि फे'क्यन प्यठ गैस लम्पर'टिथ कें'ह ज़'न्य् छि ब्रोंह ब्रोंह बुथुय ख'टिथ थ'विथ पकान । लूकव कजि दायेंव किन्य् मोम बति तु' रचख अथन क्यथ । भ्या'न्य् क्वसतान हमसा'य बाय आ'स बडि बडि वनान—"ह्यमथ दियिनव ! ह्यमथ दियिनव ।" असि ति मुचरावि दारि तु' छि थो'द व'थिथ वुछान । आवाज़ ओस हनि हनि नज़दीक यिवान—वनान आ'स्य्—(लयि मंज़)

"जागो जागो सुबह हुई ।
रूस ने बाज़ी हारी है ।
अब कशमीर की बारी है ।
जागो जागो सुबह हुई ।।

करारु' करारु' ग्यवान वा'त्य् यिम सोन निश । सानि निश ओस सडक हना खुलया तु' जो'लूस' गव हंगतु' मंगु' रुकिथ । अदु' अति वो'थ जो'श तु' दबरदन्य् मिलु'नोवुख—गरा अ'ली अ'ली तु' गरा— "हम क्या चाहते—आज़ादी" । त्युथ आ'स्य् करान ज़ि "वीणा जी" तु' "बबली" आसु' बे'होश गछ़ान । लुख आ'स्य् सारिनु'य चन्दु' ह्यवान तु' बिजली बति क्यो मोमबति अतान । यिम रोत जो'लूसु' ग'यि चोटु' बाज़र, क्रनिक'दलु' प्यठु' शुरू । जो'लूसु' ओस कनिक'दलु' प्यठु' नेसन तु' स्वनु' म'शीदि किन्य् फते'ह क'दु'ल ताम पकान* । यि सिलसिलु' रूद कें'च़स कालस जा'री । अ'थ्य् मंज़ मोरुख सतीश तिकू त्रवपरायि हुन्द, यिहन्दिस आंगनस मंज़ त्रिपोरु' स्वन्दरी हुं'ज़ थापना छे' । मागस मंज़ आ'स्य् यिम अतिनु'क्य् तिक्य्, तिक्य् चोरुम द्वह हवन करान तु' श्रदायि वा'ल्य् बटु' आस्य् ज़नानु' मर्द ओ'त यिवान तु' से'दंरि हे'क्य् क'र्य् ओरु' नेरान । खा'र अ'मिस नवजवानु' सु'न्दि मरनु' फा'हल्योवे, अपार्य् मिस

* लेखक ओस कनि क'दल निश रोज़ान

अलाकिस सख दहशत। पगाह्न ये'लि अम्युसुन्द शव आवु'रे'निबल न्यूख अ'मिस ओस वाकु'यन सू'त्य् सू'त्य् अशोक का'ज्य् नख दिवान तु' वडि वडि परान—"शिव शिव शम्भू-श्री महादेवु' शम्भू"। यि अशोक ओस म्यानि गरवाज़नि हुन्द अख वोपाह—युस दहशत गर्दव स्यठाह् बुरु' हालथ क'रिथ तु' अ'ज़ीयन वातु'ना'विथ मोरुखहेरुच् द्वह'। का'ठय्हल यारु'बल कोचस मंज़। का'ठय्हल छु श्री काठलेश्वरु' सु'न्दिस नावस प्यठ ज़ा'नदार म'हलु' पत्'यिवान। चकि आ'स्य् यिमव दहशत गर्दव यिम के'हं व्ह्यूगी तु' व्वथु'वु'न्य् नवजवान तमी विज़ि वुछिथ थ'व्यपु'त्य् ये'लिज़न स्व० टिका लाल ट'पिल सु'न्ज़ शवयात्रा शमशान भूमि कुन पकान आ'स। अदु तिमय मा'रिखे चुमटु' सू'त्य् चा'र्य् चा'र्य्।

अ'थ्य् जनव'री 1990 ई० मंज़ुय वोत मे' रेडियो कशमीर श्रीनगरु' प्यठु डाक। अख कनट्रैक्ट ओस 25 जनव'री कौमी मुशा'यरस मंज़ परनु' आमचि अकि नज़मि हुन्द का'शुर मन्ज़ूम तर्जमु' क'रिथ बोजु' नावुन। ब्याख ओस अतिची जनरल सर्विसि प्यठु' योमि जो'महूरस प्यठ मन्ज़ूम फीचर लेखु'नुक कन्ट्रैक्ट म्यूज़िक इन्चार्ज श्री भजन सोपोरी सा'बन। सू'ती आव अतिची Commercial Service शोबु' प्यठु' श्री ग़ुलाम नबी शेख ति अ'थ्य् यौमि जो'महूरस प्यठ ब्याख मन्ज़ूम फीचर निनु' खा'तरु' पानय म्योन गरु'। मे' कर्य् यिम त्रे'शवय चीज़ तयार तु' क'र्यमख हवालु'। यिमव मंज़ु मे' ग्वड्'निक्य् जु' पानु'ति बूज़्य् नशर सपदान। अदु' रेडियो कशमीरु' प्यठु' बार बार नाव म्योन नशर सपदुन ति आव मे' ज़ंगु'नु'य वलनु'। यि कथ आयि ज़िमनी।

अमि पतु' केंचि् दोही ग'यि सा'निस म'हलस मंज़ यि श्वहरथ ज़ि पुलसु' करि तला'शी। अमिकिन्य् दो'पुख म'हलुक्यन मुसलमानन क्यो बटन रा'त्य् रातस सडकि प्यठ हुशार गोज़ुन। बु'तु' काका जी ति रुद्य् अथ सू'त्य् शा'मिल—चारु' मा ओस। द्वन त्रन द्वहन पो'तुस पथ यिथ्यन गमनाक हालातन मंज़ वुन्यो'न्दुर करुनति रुदन आंछ होरनय बु' प्योस दबु'लरि तु' ग'यम ब्लैक मोशन (Black Motion)। व्वथुन तु' नेरुन फेरुन व्यूठ। हरतालव क'र्फ्यूहव अ'न्य् बतंग तु' अरु'। ज़ागन वालयन लो'ग दोखु'। तिमवच्यून ज़ि ब'छुस चो'लमुत। मगर स्व आ'स नु' कथ। दरअसु'ल आ'स्य् वीणा जी (म्या'न्यू गरु'वाजेन्य्) सतीश तु' बबली डेरादून कुन द्रामु'त्य् ये'ति म्योन ज़्युठ वोय म्योन बा'य गाश तु'तसुन्द अयाल केंचव व'र्य्यव प्यठु' पतु'निस ने'चिवि सुन्दि त'ती नौकरी करनु' सबु गोज़ान आ'स्य्। म्योन बा'य गाश ओस दव लगनु' किन्य बा'राकि प्यठ पकान। अखतुय ओस म्योन वो'ड फ़रज़ंद रविन्द्र कौल "रवीन्द्र" ति पनुन र्'वनु'ज़्वनु' करान। अस्य् आ'स्य् व'र्य्यस मंज़ ज़ो'रूर अकि लटि बा'य गाशस ख़बर अतर प्र'छ़नि तु' शुर्यन बड्यन हुन्द बुथ बुछिनि डेरादून गछ़ान। सतीशस वो'न पतु'न्यव गिंदन वाजव मुसलमान यारव हमदर्दी किन्य् च्'ु' नेर ताम बा'यिस निश डेरादून या जौम। तु' मा'ज तु' बबली द्रायि खोचनु' किन्य्।

ब'छुस व्वन्य् कुनुय ज़ौन गरि वुरनि बथरु'नि। म्या'न्य् नेक हमसायि मुसलमान छि मे' दवा अनान, द्वद अनान, तु' सू'त्य् सू'त्य् बनान चे'' पे'यी न्यबर गछ्'ुन तिक ज़ि ये'ति वातीनु' यलाज। ये'ति छि सिर्फ़ हरताल तु' कफर्यू'हु'य या'त्य् आसान। अथ कथि तु' अथ ने'बु'र्य् श्रे'हस पतु'कनि क्याह ओस वजह सु ह्यो'कनु' ने'न्य्रिथ मे'। अ'थ्य् मंज़ आव मे' निश कुसताम याद छुमनु' प्यवान तु' वो'ननम ल्वति पा'ठ्य् हे "साकी" सा'बस आ स माता स्वंगस गा'मु'च्। मे' दप्यव अ'स्य् ति गछ़ोस समखु'नि मगर बूज़ुम तस ति छु चलुन प्योमुत। मे' चो'ल हु'कु' नीरिथ हांह! कर? वे'ष्णु' बवनस आ'स्यनस जाय। मे' हसा' ओस तमि म'छ्'यजि माजि बतु' ति शूर्मु'त।—गव मोती लाल ति चलुनोवुख! हाँ—अहनसा' ज़ुवु' लज़ु'' तु' बे'या के'हं।—व्वन्य् आ'स्य् में दा'दिस के'हं द्वह गा'मुत्य्। मागु' मावसि द्वह ओस 2 जनव'री तु' मे' ओस व्वहर वोद। तथ क्याह् करु'हा तु' छुस हयबु'गु' ह्यु'व पानस सू'त्य पशान।

सुकति प्रेप्युन हावुन, योनि बदलावुन तु' साल सबु' करनि ।—पानस सू'ती हुस स्वरान कुजा ओस अज ये'ति चिर्य़ ग्युश, रनु' प्यवु' तु' अख रौनका आसान । —असि ओ'स शुर्यन सोंतु' मेखल दिनुकतु' रविन्द्र-जियस खांदर करनुक यरादु' । अवु' किन्य् ति ओस नु' असि युहुस डेरादून गछनुक प्रोग्रामा के'ह बनो-वमुत । अ'स्य् आ'स्य दपान ज़ि अ'स्य् करव वंदस अन्दर पूरु' पूरु' तया'री मेखलि तु' खांदरु'च । व्वन्य् ओस असि यी सू'चमुत ज़ि वीणा तु' शुर्य् यिन बा'य गाशस तु'वाणी सू'त्य खा'दरस मुतलिक कथ बाथ तु' सलाह मशवरु' क'रिथ जल्दु'य वापस तु' पतु' पवाव अ'स्य् तमी आयि तया'री करान । अमा पो'ज़ दहशतगर्दी ह्यो'त द्रह' ख्वतु' द्रह' बाडव कडुन । ह'र ग'यि तेज़ान । ब'छुस शुर्यन तु' गरवाजनि प्रारान तिमय यिन, मे' वोत ओरय टेलीफोन ज़ि तिम तरन न' फिलहाल वापस के'हं, तो'ही त'रिव कुनि किन्य् तु' यूत फिलिवु' तु' त्यूत जलद यूर्य् । ब' डो'लुस । मे' छुनु' व्वन्य् सो'चनुय । तगान —बु'रोवुस—तिमन मा ओस म्यानि ब्यमार आसनुक कु'हु'य पया पा'गामा । असि छु हमसा'य मुसलमान गरस मंज़ तो'मुल, वुशकु', मे'चि तील, बो'ड दरबि लोवा, ठानु' करना'व्य् मु'त्य् वारयाह टीन, गा'र ड्रमन मंज़ ब'रिथ । ड्रम ति हमसायन हु'दी । मे' मो'ठ सोरुय—खा'दर वांदर । ब' वोतुस अ'न्दु'य् अ'दु'य् ।

च'न्दुर्य् गोम 'अकि बालु' छुस खसान तु' बे'यि वनु' छुस वसान । अ'ध्य् मंज़ यीतन मे' अख हमसा'य मुसलमान ल'ड़कु' हा'ना खबरि । लरि सू'त्य् छि ल'र । यि आव मे' क्युन दवा ह्यथ । यि ओस व्व ह्य न'विमि जमा'च् ह्यु वपरान । म'ज़्य् म'ज़्य् ओसुस बु' अ'मिस परनाव ति । अ'म्य् वो'न मे' खूच्य् खूच्य् —''अंकल जी तुहन्दिस बरस तु' आबु' टेंकी (व्वसु' म्या'निस मकानस सू'त्य् सड़कि प्यठ आ'स) आ'स्य पोस्टर ल'गिथ ।—तिम तूल्य् बड़्यव म्वहि'विवत थो'द) प'रिथ थ'विख चू'रि पा'ठ्य) मे' रूद शकतु' ब' खो'तुस चू'रि-चू'रि का'नी प्यठ तु'मुत्तरिथ पो'रुम—न बु'वनय नु'—गरिक्ष मारन ना—बु' वनय नु'—। मे' को'रुस दगु' मगु'—ख्युतमस कापी पेंनसल तु' कलम जोराह—दो'पमस यि गो'य च' वदु'च का'म करनु' खा'तरु'—अख्तुय ह्युतमस वे'नि तु' अ'किस द्रन हमसायि शुर्यन खा'तरु' ति—यि ओसुस बु' यित्रन मंज़ परनुक शोक़ व्पपदानु' किन्य् दिवु'वुनुय ''सोनी'' आ'स असि हमसा'य कोरि पींछा अख—अ'स्य् आ'स्य् तस बा'चि बा'चि ब्यो'नुय ब्यो'नुय ल्वलु'मतु'लाय करान । स्व छे' पनु'न्यव शुर्यव ख्वतु' र'छमु'च् असी । यि आ'स सा'त्यन आ'शनावन रुशनावन तु' ज़ा'न्यकारन ति पताह। त'हंदि अंदु'क्यन ति तु' सानि अंदु' क्यनति । तस ति ओस युथुय माय म्वहबत । अ'मिस ति सुजुम पनुन हिसु' अ'म्य्सु'य अथि । यि बा'गरा'विथ आव यि ल'डकु' वापस तु' मे' वो'नमस—''अदु'सा' तु' व्वन्य् क्याह ओस अथ पोस्टरस लीखिथ'' ?—बु' छुसवना त्वहि ईदयानु' दिवान—हाँ—घुहुस दिमय च' पांछ रवपयि बे'यि कम कम चीज़—च़ु'वनख ना पनुनिस अंकल जियस । यि कुमु'ल्यव तु' वो'नुन—''तथ ओस लीखिथ—सायिल साहब जब तुम यहाँ वापस आओगे तो अपने साथ एक आदमी लाना जो आपकी लाश ले जाएगा—तिक्याह गव अंकल जी—?'' —''में दो'पुस किंही नु' बकुवास—यिमन छे' खबर यि छु को'त ताम चो'लमुत । बु'म वुछहस—बु' ओसुम ना ब्यमार तु' तवय —'' वा'छि क'रिव पनु'न्य् का'म—धि द्रात तु' बु' छुस पनु'नि च्यतु' वो'तरिस पेन हिश दिवान—मे'य खो'त ख़त तु' क्याहसना बु' तु' अख स्यो'द सादु' गरीब मनुशा —अ'स्य् पानु'वा'न्य् शीरु' शकरे हिव्य् र'लिथ तु' मीलिथ । कमि मजु' लसान बसान । अख अ'क्यसु'न्य फिकिर ह्यवान । जांह सरव नु पानु' वान्य् मुचकरि ग'मु'च्—कमि खा'तरु' । ज़ुहु'य न—तु' यि क्याह ते'लि ? यिम म्या'न्य् नाति शरीफ लेखान ग्यवान —ब' पानु' म'शीदि हुंद चंदु' सो'बरु'नस ब्रोंठ ब्रों नेरान मे' प्यव याद अमा म'शीदि वाज़ खानु' दप्योव में अकिफिरि नाव ह्याथ तु' न'निरिथ गछि मुसलमानु'नु'य योत दुआचि खा'र करुन—हमसाय

तु' प्रथ अ'किस खा'तरु' रुत कांछुनुय छु क्वरानि हृ'कीम—ती मा फो'रुम—म'शीदि हु'न्दिस दर्सगाहस मंज़ ये'लि मंहलु'क्य् शुर्य् सबक आ'स्य् परान—तोरु' नीरिथ आ'स्य् यिम बटु' मकानन हु'न्द्य् शीशि फुटरावान तु' बिजली बति फुट'रावान—वारयाहि लटि युथ सपदु'नु' पतु'वो'न मे' तिमन—''ह्यो तो'ह्य् छिवा दर्सगाहस मंज़ यी हे'छान—तति छिवा यी वनान करुन ?''—यी मा गोम वुल्टु'—। रेडियो प्रोग्राम दिन्य् ति मा फो'रुम—म्योन नाव रेडियो, टी॰ वी॰ प्यठु' बोज़ुन माछु यिमन नागुवार गछान—न'तीजि द्राव पगाह सुबहनसु'य ज़ि मया'निस मकानस युस म्योन नेम प्लेट (Name Plate) ल'गिथ ओस तथ तु' दार्यन हुँद्यन शीशन ओसुख कन्यव सू त्य् चिकना चूर को'रमुत—तु' मे' आव ह्यस ।—सू'ती प्योम याद ज़ि ज़न्म अष्टमी द्वह' तु' दशहारु'कि द्वह' जो'लूसु' वसनु' विज़ि आ'स्य् अ'स्य् पनुनिस म'ह्लस मंज़ चंदु' क'रिथ, प्दोति सो'बंरा'विथ डेडि करान—ल'स्य्—त्रेश, तु' म्यवु' बा'गरावान तु' बु' ओसुस थिमन एहेतिमामन हुंद मोहतु'मिम आसान ति क्याज़ि सडकि प्यठ ओसुमना मकानु' । बु' करु'हा'नु इन्तिज़ाम तु' अदु'कुस करिहे । यिमन आसु' अ'छबाह बाह पल गछान मगर मे' ओस नु' पनुनि श्वज़रु' किहीं बासान—

''मे' मा छल्य् ब'ल्य् तगान हावुन बु'नादान,
मे' पनु'ने श्वज़रु' सा'री पाक बासान ।
व्वं गव तसली दिलुक ज़ोनुममे' वो'ड़राश ।।
मंगुन पानस क्युतन छुम मोथ बासान ।।''

ब'छुस यी गू'गु'रावान—तु' ओरु' यीतन सोनी त्तु'वडिहटि—' अंकल जी दवा छुयना चे' चो'न—दवा चे।'' दवाह तु'चोम मगर परेशान छुस व्वन्य् बनि—मे' छु ओ'श वसान तिक्याज़ि ब्यमारि लद छुस वथरु'निस ला'रिथ—ह्यमु'थु'य छमनुतु' हंगतु' मंगु' आव अख ज़ा'न्यकाराह. अ'मिस वो'न सोनी हु'न्द्य् मा'ल्य् व्वसतु' का'दिरन ज़ि ''सोयिल सा'ब'' छुब्यमार । तिक्याज़ि यि मा आसिहे लो'त लो'त आलव करान मे'य ।

सु चाव अन्दर । सा'री हालाथ शींकिथ वो'नुन—ये'ति हे'कि नु' यलाज ति वा'तिथ—आ'खु'र क्याह बनि—छुना सलाह अ'स्य् नेरव द्वन च्वन द्वहन दिलि । खांदर छु तति । असि छि टिकेटक'रिथ-तो'ह्य ति यियिव असी सू'त्य् तामथ ।—मे' ज़न आव दारिकिन्य् अ'न्ज़ मे' अयि नु' पछु'य तु' मे' को'रुस आंकार तु' प्रुछमस कर छुनेरुनसु वो'थ का'ल्यक्यथ सुबहा'य । यि गव फा'सलु' ; यि ओस 2 फर्वरी '90 ।

शामन ये'लि मे' दवाह च बतु अनिगो'ट गव—अख नवजवान खे'जाह ब'छ सानि सडकि तु'छि बड़ि बडि वनान—''थो'छ्य मा'ल्यकन यिम कडोख वायान तु' गायान—यिमन ताख फिकिरि ज़ि क'ह्य् छु गज़ । दूरि प्यठ कनि वर्शु'न क'रिथ को'र यिमव अज़ चूरिमि फिरि दारि शीशन चूरु' चूरु' । राथ ग'यि यिमन द्वलाब्न सो'चान सो'चान—गाश प्वलु'-वुनुय वो'थुस बु पलव छ्'निम ना'ल्य् बैगु' प्यूताह तुलुम यथ मंज़ दवाह तु' डायरी आ'सु'म बस—* बोतुस आटोहस मंज़ अडस प्यठ—बिस्कू स्कूलस निश । यि ओस 4—फर्वरी '90 ई॰ । ब'छुस अडस मंज़ वातु'नय ज़ि अख वीडियो बस वुड़ा'व आंत-कियव बामु' सू'त्य् । सा'री त्र'हरेयि । वे'जिब्रारि करेयख कनिलायन बाल्यन हु'न्दि बीमु' वापु'सु'य । मगर अख ज़ु'मील वापस यिय द्रायि के'हं मिलट्री गाडि तु' के'हं सिवल गाडि ति पचि यिमनु'य पतु' पतु' यथ मंज़सा'न्य् गोड्थ ति आ'स । फाकय फुकरय वा'त्य् चीर्य् जो'म । रेलवे सिटेशनस प्यठ क'ड्राथ । यिम म्या'न्य् सा'थी द्रायि दिलि—बु'द्रास शामन 5—फर्वरी '90 डेरादून तु' वोतुस 6 फर्वरी '90 सुबह शुर्यन निश । अदु' पतु' रूदुस र्यथ ज़ु'रयथ तती ब्यमार तु पतु' संबला'विथ आस जो'म—यि आ'स म्या'न्य् चलन शे'छ । □

---

* त'थ्य् सड़कि प्यठुचि टैंकी तु' म'हलुकिस नावकिस बोर्डस थो'वमस योरु' तथ नोटसि जवाब लीखिथ ग्वसु' मे' आसु'ख बरस ला'गिथ थ'व मुच:—

लूकु' मालस गसु'व क'र्य् कर्य् वन च' पूरी क्याह सना,
पाम था'वु'थ पा'न्य् पानस क्याह ग्वहय मिलु'चार छा ।
छुस चलन वाल्यन क्युतुन लीख्य् लीख्य् थवान,
फेरि ये'ति-व्वन्य् अ'छ लुकन ये'ति ब्युहुन व्वन्य् छुनु' रवा ।।

Editorial

Dilemma of Displaced

The Election Commission's refusal to hold the elections in J & K has settled the dust for same time and the tension which had started gripping J & K has gone down. However elections are to be held today or tomorrow as there is no denial to this fact that slowly and steadily peace with uneasy calm is returning in Kashmir. Absolute peace in Kashmir may never come. The reaciion of our Beradari to election process was full of aversion and dejection. The Election Commission refused to meet the delegations of Kashmiri Pandit displaced people in Jammu on the plea that it is bound to meet only the political party delegation of J&K state.

A Pertinent question arises. When K.Ps were whisked away from Kashmir which political party came forward to help us or hold us back in Kashmir and stop genocide. The political party which actually helped the crest fallen and devastated K.Ps is branded as Communal Party and any one speaking fr m its ranks is detested by so called secular parties Ruling Congress is busy in cornering militant leaders and it has left us in the ditch. National Conference has put forward the demand of autonomy which is three metres short of independence. In such a scenario who could r present the displaced. It was but natural that leading K. P organisations wanted to plead the case of displaced people to safeguard their rights guaranteed by the Indian Constitution (i e) Right to fight elections and Right to vote and Right to Convass How could commission take decision or frame an opinion about 3 lakh people in exile without meeting them. However the commission did not relent and left J & K without meeting I. D. P.

This is not the first time that the P.M's office, the home ministry and the present Governor of J & K and the JK bureaucracy is ignoring us and even trampling us. Probably we have become immune to this situation.

For how long will we allow ourselves to be thrown into oblivion ? I wonder if we can survive as a race under this inmical condition. We have surrendered before waging a fight. We have forgotten our homeland. We have forgot en cruelity agony, murder and loot by fundementalist Kashmiri muslims The only activity which has survived is luxurious lunch and dinner offered in marriage parties How long can a race survive on this ? There is always a purpose, a cause a history, a background, a cultural suste ance as well as resilance required by living society. Damalo and Rogunjosh will not ultimately decide our future, Hundreds of K. P. houses have been burnt since Election Commission's visit to Kashmir as a warning and reprimand to KP's and Indian Govt. No political party has raised hue and cry over this situation We have to fight for our cause ourselves with our own might unitedly and in one direction. The community leadership has failed to give lead to the community in present ardent times In such a situation the intellectuals in K. P. community should take lead and resurrect the crest fallen I.D.P.

—A. K. B.

The Shining Star Shri R. C. Tiku shall continue to shine till the Cricket is Alive

☐ Shri T. N. VAISHNAVI



Shri R. C. TIKU

1. Vetern Cricketer of the State Mr. R. C. Tiku, popularly known as Ramjoo, born in Srinagar Khankhai Sokhtha, Safakadal in the year 1907 breathed his last on 14-11-1995 at Jammu after a brief illness, at the age of 88 years.

2 From the early age he was born a true Sportsman who brought Cricket to the Sports lovers of Kashmir. When he was barely a 4th Primary Student he was presented a book titled, "STAR OF INDIA" for being an outstanding Sportsman of the Branch School, having participated in the disciplines of Cricket, Hockey and Football. He came into prominence in 1923, when he represented State High School in the inter School Tournament and due to his excellent performance, the School Cricket Team won the final of the Cricket Tournament for the first time and as a result his name was written on the Honours Board of the School when he was just 16 years old.

Continuing the Cricket Activities in Srinagar, Kashmir, he founded the Kashmir Cricket Club (K.C.C.) in the year 1930 and also founded the Jammu Cricket Club in the year 1936. While dedicating his whole life to the Promotion of Cricket in the State, he founded the JAMMU & KASHMIR Cricket Association in the year 1958 and was its First General Secretary for three (3) years and thereafter as its Vice-Chairman, Treasurer and Selector for three (3) years each. He was also a Member of the Jammu and Kashmir State Sports Society.

3. He was awarded various Prizes/Cash Prizes during his long Cricket Career spanning over Seventy Years (1923 to 1995). In the year 1981 the Board of Control for Cricket in India while hailing his contribution for nourishing the game of Cricket awarded a Cheque for Rs. 5,000/- to him out of the benevolent fund alongwith former six other Cricketers of India. Subsequently he was also honoured by the J & K Cricket Association. The Government of J & K acknowledged him as a Veteran Cricketer of the State and was falicitated by the Governor of the State Shri Jagmohan on the National Independence day on 15th August 1987. This function was attended, among others, by Begum Sheikh Adullah and Dr. Farooq Abdullah, the then Chief Minister of the State.

He was a Colour-holder of Kashmir Olympic Association, Kashmir Cricket Club and the J & K Cricket Association He had been the best and the fastest opening bowler and opening Batsman of the J & K State. In the year 1935, he captured all the Ten Wickets in one Inning against one of the visiting Bombay Cricket Team which included five penta-gular players. Due to his devastating bowling the visiting team lost the match by an Innings and 112 Runs against Kashmir Cricket Club at S.P. College grounds, Srinagar.

4. He accompanied the Jammu & Kashmir Cricket Team as its Manager-cum-Player in the year 1959-60 to play National Championship Ranji Trophy at Jalandhar, Patiala and New Delhi. He participated in this Chamionship at the age of 53 years, which is a record in the whole world. Earlier, Miran Bux of Pakistan had held this record as he had played at the age of 48 years.

5. He had the distinction of playing with Cricketers of repute like :—

1.	Late Col C.K. Nayudu	One time
2.	Col. Hemo Adhikari	Indian Test
3.	Late Nawab of Patudi (Senior)	Captains
4.	Late Maharaja Kumar of Vizinagran	
5.	D. G. Phadkhar	
6.	Fazal Mahmood	One time
7.	Imtiaz Ahmad	Pakistan Test
8.	Ameer Illahi	Captains
9.	Vijay Mehra	
10.	Maharaja of Indore	
11.	Prince of Cooch Bihar	

6. He also participated in the Festiva Cricket Matches as a Member of Prim Minister's Eleven against Film Stars' Elevei played at Amar Singh Club, Srinagar, in th year 1956 and 1958. He supervised th Coaching camps conducted by Mr. P. R Umrigar and Mr. Chandu Borde, India Test Captains held at Srinagar in the yea 1978 and 1980 respectively He continue his activities with the Game of Cricket til last and only recently i.e. in April, 1995, h was honoured as a Veteran Cricketer of th Jammu and Kashmir State on the occasio of conclusion of function of the first Veteran Cricket Tournament held at Jammu.

7. His Sports genes flourished through his sons/daughters/Grand sons and Grand daughters. Amongst his progeny two of his sons have represented the J & K State in the Ranji Trophy Championship for a good number of years and his grand sons/grand daughters continue to contribute the Sports era in its various disciplines.

In keeping with the highest traditions of the Sportsmanship in the family his grand daughter Shovna Vaishnavi who had represented Nationals on several occasions left for participation in the National Basket Ball Chamionship at Jamshedpur (Bihar) on 14-11-1995 after attending the last rites of the STAR GRAND FATHER and bidding him Salute.

9. While inaugurating the Sheri-Kashmir Cricket Stadium at Srinagar Dr. Farooq Abdullah the President of the J & K Cricket Association desired in the middle of his speech that a life size Photograph of his would be installed permanently at an appropriate place at the Cricket Stadium, being the father of Cricket in the J & K State.

Who are the enemies of Hindus

This must, however be said to the Chagrin of the Hindus that their greatest enemies have come from among themselves and if the Hindus have any interest in their own survival they must learn to spot their enemies within the Hindu Camp. They must also know their enemies outside who, though they pose friends, act insidiously only as enemies. When seen in this perspective record of the Hindus who have ruled Hindusthan after A.D. 1947 when India once again became politically free is easily the murkiest. These Hindu rulers masquerading as democrats and secularists, have inflicted and continue to inflict more dangerous wounds on the Hindu Psyche than had either the Muslims or the Christians done in the past.

Dr. K. Valla Bhpaliwal

India Heading Towards A War

☐ S. K. WALI

Right from my birth and childhood, my parents, friends, books and teachers guided me to know my mother, whose name is "MOTHER INDIA". I was appraised about her shape, size, nature, tolerance, resources and different cultures, she is possessing. I myself read about great souls, spiritual saints, scholars, scientists, statesmen and leaders my mother has produced. I too red about great brave martyrs who had laid down their lives for the honour of my mother during freedom struggle and in various wars fought before or after freedom of my mother land. My brothers and sisters at present are laying down their lives and are also ready to sacrifice their lives and are also ready to sacrifice their lives for the honour and respect of 'Dear Mother India'.

Like all other children my mother feeded, nurshed me with blood of her veins, till I attained age of twenty three years. I managed my bread and butter, but my mother never demanded anything from me in return.

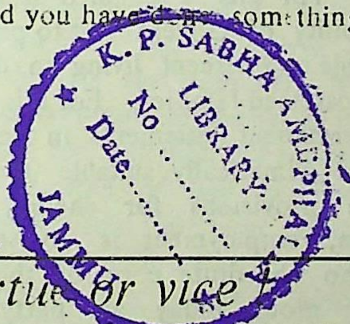
Suddenly, one day I heard some one crying when I was thirty eight, I went here and there to see who is crying in pain. I enquired and informed my brothers and sisters that some one is crying loudly in pain. I travelled from north to south, east to west of India and continued my enquiry about the source of cries and pain Whomsoever, I met he introduced him or herself to me and said. "He is a Brahaman, Rajput, Choudhary, Mahanjan, SC, ST, BC, Gujrati, Punjabi, Kashmiri, Bengali, Madrasi, Tamil, Dogri, Assamee, Maratha, Hindu, Muslim, Sikh, Christian, Poor, Rich etc all of them were calm and cool, the movement they moved their lips, the valcano of anger, hatred, against each others cast, creed, colour, religion and region errupted, except a few i e one percent of toto I was never expecting or have realised before, that the souls produced by my mother have taken the shape of volcanoes. I realised, and felt who is crying at once, my mother is crying. I asked my mother, "What is wrong with you ? Why are you crying ?" She told politely, "My son, when she got freedom, her sons and daughters were happy, she too was happy and started programme for eradication of poverty of her children. She was blessed with progress in economic, agricultural, medicine, science and technology, social and cultural fronts, but some one having the shape of Intern tional devil is jealous of her progress and have engaged her own children for breeding and nurshing the verity of snake seens on her body, in the shape of Terrorism, caste, creed, colour, religion, regionalism, corruption, pollution etc., etc *. Now the snakes have transformed into king cobras, drakes and are biting her hard and cry. Till a decade more, she can tolerate the bites."

I was astonished, and cried, the teachings of great souls, scholars, statesman and

* For their pretty vested interests, for menting money and power.

sacrifices of brave martyrs and soldiers produced by my mother have gone meaningless and purposeless. They are being remembered for formality sake only. I was forced to write and appeal to my all brothers and sisters and inform them, please realise the sufferings, disease and pain of mother and her cries, please come forward irrespective of caste, creed, colour, sex, religion, region, class and let us unite and fight collectively the menace of 'International Devil' who has sponsored, declared the war and are troubling my mother, still there is time to realise the pain and crises of mother, otherwise, mother is heading towards a war, which will take the shape of ugly revolution, among its children within a decade to come. The silence, will take the life of all of us alongwith our those brothers and sisters who are troubling our mother on the behest of Internation Devil, and the money, power accumulated by them will be of no use to them. Let us make them to realise the cries and call of mother. If we all children of mother realise, and treat the mother well, she will recover and will allow us all to play in her lap, with love, joy and peace.

I am not a writer, or an author I am son of your mother, and appeal you all, through paper, that feel or realise the pain of your mother, if you feel and realise the pain of mother, please write to the 'Worthy' Editor of this daily, so that the mother too will realise that you share her pain and you have done something for her relief.



Limitless Patience a virtue or vice?

"The simpleton Hindu chanted "Ahinsa Parmo Dharma !" and long live global peace !" and was EXTERMINATED in Sindh and East Bengal. He could do NOTHING when in 1947 his secularism dissolved like a clod of mud in heavy rain. Secularism is MUD in Srinagar where Pak agents rule the roost. And where they rule the roost. Hindu and his secularism becomes ZERO. Pak-agents of Kashmir are roaming free among the Kashmiri Patriots whom they exiled and their swords of BLACKMAIL and BULLYING keep them terrified, intimidated and crushed in fragmented partitioned Hindustan.

Timid Hindus forgot Hindukush Disunited Hindus forgot 712 and 192. Gutless Hindu even forgot 1675 (beheading of "Jagatguru Tegh Bahadur"). What lesson the Hindu masochist learnt from Sir Mohammed Iqbal of "Sare Jahan Sey Acha Hindustan Hamara" fame who became 'ideological", father of Pakistan when opportunity came ?

A victim of partition (1947)
who fled to far off Fiji to be ousted from there
to another foreign country in 1980's

Kashmir—Ending Impasse—Some Concepts

The fast changing situations and emerging concepts for ending Kashmir problem is cause for concern and have purturbed the ordinary Kashmiri's mind. We produce a note covering some of these points to keep our affiliates/members of the community informed and prepared for any moves they may consider necessary to safeguard our interests.

□ Sh. M L. KAUL
General Secretary
A.I.K.S.

1. AIKS ever since 1990 has insisted on return to the valley provided conditions there are conducive for us to live a life there with honour and dignity, with adequate safeguard for Socio-economic and political security. Till this is enabled it is moral responsibility of Government to provide an honourable and descent living to displaced and dispossessed families. For this purpose a quasipermanent settlements in geographically and climatically suitable areas with adequate provisions for shelter, health, education, employment is foreseen. All those who constitute c re of the Panun Kashmir group today are party to this decision. But unwise council prevailed that made them oppose it on the very next day of passing it unanimously What went wrong then and who were the people behind remains suspect till today. Had the community remained united in presenting their problems things would have been somewhat different for the displaced community. Our distress will continue to get prolonged so long we remain disunited in facing our problems.

2. Coordinated unified approach on community problems is an article of faith at AIKS. Panun Kashmir's separate homeland was discussed many a times at AIKS, in its Advisory Council meetings and with Panun Kashmir at various levels. We are always prepared for such a dialogue Our stand is that we are a scattered miniscule minority, numerically so small that if we play the political card and form a vote bank we will reach nowhere. We will loose the goodwill and end up in enemity.

3. Political issues to the extent these effect us could at best be attended to by a small group under the community's overall control. We who have come of age can afford to be isolated. Let the youth feel they are listened to. They should be talked to. Discussions in groups will lead to polarisation. One to one discussion will prepare the ground for unified action. We have to guard against stepping into some kind of things that will ultimately recoil on us. Our involvement has lot of implications and ramifications. We have to strengthen ourselves to resist to shape any environment that advances outside interests that are suicidal for us. Response from displaced Kashmiris should be such that it will not embrass the Government but indirectly help them in facing external pressure. Our future is connected with the integrity of India and can be solved only if India remains one entity. Any such move that supports division of Kashmir will fulfil Pak ambitions.

4. The consensus at AIKS is that Panun Kashmir certainly puts things in the minds

of the people that we have a claim and a place where we can live. A seperate homeland may not prove to be a long term acceptable solution. The concept could at the best be a slogan a strategy or a tactics to keep our interest alive. A call for home land should make no committment anywhere least of all earmark any specific territory which is not viable socio-economically or politically therefore not workable proposition. We should have refugee camps in the Valley and spread out from there ; we should seek exclusive and adequate safeguards and protections to be defined after the conditions under which Kashmir problem is solved will become known. Till then we have to be watchful, alert have patience and keep our interest alive with ever strong voice in a unified manner and bring all shades of opinion under a unified coordinated body for a common strategy. Modalities have to be worked out.

5. Immediate humanitarian needs can not be sacrificed till the long term problems are resolved. Our struggle is long drawn one. Immediate issues of survival at stake are to be tackled on priority. It is the primary responsibility of the Government to provide relief and rehabilitation Any other help will be a scratch on the surface. These will get resolved if we go with one voice to the Government. We have to strengthen our self-help programmes and accept help from all quarters We have to garner support from all such organisations who officially espouse our cause. It would be regretful if there was group rivalry on the community's future.

6. At AIKS we have a feeling that based on ground realities that all of us are talking the same language and have the same feelings for all of us who have suffered in great intensity and at the hands of groups of people who believe in terrorism, fundamentalism and fascism. In a letter to Dr. Agnishekhar, President AIKS emphasised that "when we sit to ponder, we come to same conclusions and almost make the same kind of recommendations and resolutions, may be there is a difference in emphasis of solution to the problems".

7. In a letter to President AIKS one of the senior founder members of IAKF has confirmed that homeland resolution of 1991 has elements that can be divisive in particular in naming the part of the Valley But in its *current form this resolution gives us a clout vis-a-vis the militants*. Therefore we should continue to speak of it as and when called for, although *we should underplay the mention of any specific region.* "......Looking from long term point of view the argument for a Homeland remains valid. The premise being *the end objective in political party with Kashmiri Muslims not creation of separate Homeland......*"

Although Homeland is not a viable one "We should ask for best to get something. Talking about it scores points we should take quiet steps to consolidate our presence in certain parts of the Valley".

8. It may thus be observed that there is hardly any difference in the perceptions of the two. When there are no basic difference why then we do have a difference in approach ? What are the compelling reasons for not to come to a minimum acceptable coordinated short-term and long term programmes on issues connected with the immediate and long-term needs of displaced community.

9. Governance through majority party rule

has failed to give socio-political parity to ethnic minority anywhere in India. The displaced community is destined to play a historical role and may be required to make lot of sacrifices in order to strengthen the cause of National integration. We have to storm the government as a united strong group for istening to the problems of grave discrimination inequality in access and opportunity. We have to make a common cause at the National level with all those internally displaced persons who were similarly forcibly displaced ; who are entitled to fullest possible financial and political support from the government and international organisations. We have to do something fast to uphold the National vision of India and force the Government to enable us to return to our homeland in total safety and socio-economic and political security with adequate financial assistance to start a new life. Any solution imposed by outsiders envisaging succession of a part of country or suggesting balkanisation is against our interest and is unacceptable.

PKM Strongly Resents Political Package

Prime Minister's Announcement of Political Package inducing Allurements Envisaging Structural changes in Jammu & Kashmir constitution thus creating a state within state PANUN KASHMIR MOVEMENT (PKM) condemns this unilateral move.

Declaring dangerous political gambit from foreign country, where Prime Minister is on tour, is a National Humillation as the Supreme Sovereign Indian Parliament has been by-passed and none of the Political rganisations taken into confidence.

ailoring Political dispensation of Jammu & Kashmir State exclusively for National Conference supremo Dr. Farooq Abdullah to accomodate his aspirations at the cost of various segments of society is deplored.

Displaced Kashmiri Hindu community living in exile for last six years who cease to be ordinary citizens, subjected to uncertainty and humiliation stand exploited and ignored by the vested Political interests of ruling political elite to cover their failures on Jammu and Kashmir front.

Panun Kashmir Movement (PKM) asserts that Political re-orientation is imperative so as to accomodate aspirations of all the regions and segments in the state. Kashmiri Hindu community as the Fourth factor condemn any overt or covert move to force this hapless community into this farce to vote for separatist and scessionist forces. Kashmiri Hindu community do not subscribe to be a party to majoritarian politics of polarisation & division.

Panun Kashmir Movement be furnished with statement of Prime Minister to enable us to proceed to Supreme Court of India for seeking Justice.

Ashwani Kumar, Convenor (PKM)

KASHMIR SHAVISM

□ **SOM PRAKASH BALI**

Extract of the translation by Shri Jai Dev Singha on the text and commentry by Khem Raja a disciple of Abinov Gupta on Kashmiri Shaiva Philosophy :

1 The system of Shavism is known as '*Chit*' or Paramshiva or *Maheshwara* It is called *Maheshwara* not in the ordinary sense of God as the first cause that is to be inferred from the order and design of nature. It is called *Maheshwara* because of its absolute sovereignity of will. *Swatantre* or *swatantriya* is his absolute sovereignty of freedom It is not a blind force but the *sawbhava* on being of the universal consciousness *chit* It is the sovereign feeling that things about the objectification of its idiation. It is free in as much as it does not depend on anything external. It is free and potent to become anything. It is beyond all the categories of time, space etc for these owe their origins to it.

2. Now *Ishwer pretibigniya* says that the Divine power is known as *Chiti*. Its essence is self consciousness. It is also known as *para vakh*, *vimarsha*. It is in itself ever present eternal, It is *swatantra*. It is the main power of this freeing self. *Pravakh*, *vimersha*, *Ishwariya* etc. are only synonymous of *Swatantra*. Again in *Ishwar pratibigniya* it says this *chiti* or power of universal consciousness is the inner creative flush which though in itself unchanged is the source of all apparent change. It is *Mahasata*. All utter being in as much as it is free to be anything. It is the source of all that can be said to this. In any way it is beyond the determination of space and time. In essence this solemn will may be said to be the very art or nucleus of the divine will *swatantriya*. *Maheshwar* means absolute sovereignity of the divine will. It allows unimpeded activity of divine and an expression of self consciousness. *Swatantriya* means the power to deem according to divine will It is the unimpeded unrestrained flow of expression of the divine will *Swatantre vade* of the Doctrine of the absolute sovereignity and freedom of the divine will to express or manifest self, is unray its light has been mainly explained in the following words by Abhinov Gupta who has beautifully said, this, therefore the lord *Param Shiva* the absolute reality who's all being is consciousness of the nature of *Prakasha* and *Vimersha* who all the undeniable ever present reality appears as subject from *Ruders* down to the immovable entities of object, like blue pleasure etc. which appears as if separate though is essence they are not separate. So the glorious might of *Swatantra* free will which is in seperable and *samvit* universal consciousness and which does not conseed of *swatantra vada*. The doctrine of *swatantra*. It was *swatantra vada*.

Now the *Abiyasavada* from the point of view the creativity of ultimate reality the philosophy is known as *swatantravada* from the point of view of manifestation. It is known as *Abiyasvada*. In the ultimate reality the entire manifestation variety is in

perfect unity and undifferentiated mass just all the varigated plasma of the peacock. Its beautiful rich colour was in a state or undifferenciated mass in the plasma of its egg. This is called in its system the energy of its plasma of the peacock's egg The underline principal of all manifestation is *Chit* of the universal consciousness The world of ever changing appearance is only an expression or *Chit* or *Samvat*. All that appears in any form weather as an obj ct or subject or knowledge or means of knowledge or senses all that exists in any way is only an *Abiyasa*. A manifestation of the universal consciousness the world *Abiyasa* is '*A*' that is *Sak Sankocha*. *Basa Basanam* or *Prakashni* so *Abiyasa* is man festation or appearnce in a limited way. Every kind of manifestation has some sought of limitation. Everything in a distance is a configuration of *Abiyasa* just as in a clear mirror every images of city villages etc., appear as different from one another and from the mirror though they are non different from the mirror even so the World is n n-different from the purest consciousness or *Param Shiva* appears as different both in respect of its varied objects on the universal consciousness *Abiyasa* are explained on the energy of reflection in a mirror just as reflection in a mirror is not in any way different from the mirror but appears as some thing different. In so *Abiyasa* are not different from *Shiva* and yet appears as different. Just as in a mirror a village, a tree, river etc. appears as different from the mirror but truly spoken nothing different from it. Few exceptions have however to be noted in the Analgy of the mirror. Firstly in the case of the mirror there is all external object that is reflected. In the case of *Maheshwara* or universal consciousness it is its own ideation that is reflected. In the case of the mirror there is an external light owing to which reflection is possible. In the case of the universal consciousness it is its own light. It is the light of all lights It does not require any external light, certainly the mirror being non-consciousness does not know the reflections within its self But the universal consciousness knows its own ideation which appears in itself. *Abiyasa* are nothing but the ideation of the universal consciousness appearing as external to the imperical subject Yet all the variety of objects appears within a mirror so the entire universe appears within consciousness of the self-consciousness however owing to its power of *Vimersha* of self-consciousness knows the world not so the mirror its objects. All *Abiyasa* rise like waves in the sea of the universal consciousness just as there is neither loss nor gain to the sea which with the rise and disappearance of the waves. In so there is neither loss nor gain to the universal consciousness because of the appearnce and disappearnce of the *Abiyasa*. *Abiyasa* appears and disappears but the underline consciousness is unchanged The *Abiyasa* are nothing but the external projection of the ideation of the divine. *He Shiva*. As *Shiva* himself full of joy enhanced by the honey of the three corners of his heart viz *Ichya* or will, *Jinana* or knowledge, *Kriya* or action rising up his face against as his own splendour is called *Shakti*. When he comes in front roll out the entire splendour of the universe that is contained in his heart in a germical form he is naked as *Shakti*. *Shakti* is therefore his intenseness to create *Shakti* is the active as genetic aspect of consciousness, *Shiva* philosophy does not conceive of the supreme as logo-machine but as an artist. Just as an artist cannot contain his delight within himself. But pours it out into a song, a picture, or a

poem. So the supreme artist pours out tbe delightful wonder of his splendour into a manifestation of creation Shakti prone by the delight, late herself go forth into manifestation. All manifestation is therefore only a process of experience out. Creative ideation of *Shiva*. In *Shakti Tatwa Ananda* aspect of the supreme is perdominated. *Shiva* and *Shakti Tatwa* can never be disjoined. They remain for ever united. Whether in creation or disolation *Shiva* as the experiencing principle. Experiencing himself as pure (I) and *Shakti* as profound bless. Strictly speaking *Shiva* and *Shakti Tatwa* is not an emaniation or *Abiyasa*, but the seed of all enamiation there is difference between the *Sankhiya* conception of prakrati and that of Trika, Shankara believes that Prakrati is one and universal for all the *Purshas*. *Trika* believes that each pursha has a different parkirti. *Prakirti* is the root or matrix of objectively.

Comparison and contrast with Shankaras advitva with Shiava Philosophy :

Shankars philosophy is known as *Shanta Brahmavadha* or *Kaival Advita* or sometimes as *maya Vedantawade*.

The *Shiva* Philosophy of Kashmir is known as *Iswara Advit Vadha* or *pretibijniya* or *trika* philosophy.

Since Shankra believes that *Brahman* has no activity his philosophy mostly characterised as *Shanta Brahamavadha* or the philosophy of in active Brahman by the Shakara philosophers. The first sailent difference between *Shanta Brahamavadha* and *Ishwar Advit Vadha* is that according to the former the characteristics of *Chit* or *Brahaman* is only *Prakasha* or *Janana*, where as according to the later it is both *Prakasha* and *Vimarsha*. In other words according to *Shankara* the characteristic of Brahaman is only *Janana* knowledge. According to *Ishwar Advit Vada* it is both *Janatrita* or knowledge and *Kartrita* activity.

Shankra thinks that *Kriya* or activity belongs only to *Jiva* or the imperical subject and not to *Brahaman*. He takes *Kriya* in a very narrow sence. *Shiva* Philosophy takes *Kartiktava* or activity in wide sense. According to it The *Janana* is an activity of the Divine. Without activity *Chit* of the Divine being would be inart and inpractable of bringing out anything Since *Param Shiva* is *Swatantra* that is his sovereign will or free will Therefore he is a *Kartita* doer as Panani, puts it *Swatantrita* only a free will being is doer. *Swatantra* free will and *Kartivta* power to act are practically the same thing.

In *Shanta Brahnmavadha Brahaman* is entirely in active. When *Brahaman* is associated with *Avidiya* it becomes *Ishwara* and is endowned with the powar to act the real activity belongs to *Avidiya* the activity of *Ishwara* seizes when he is discoceated from *Vidhya* Shankara says categorically thus the potency of *Ishwara* his omnisence and omnipotence or contingent upon the limitation caused by the commission or association of *Avidya*, Primal ignorance in the highest sense when all conscience are removed by *Vidiya* spiritual elumanition from the Atman. The use of potency omniscence etc. would become in appropriate for it. So all activity in this case of *Ishwara* is according to, Shankara due to *Avidiya*.

On the other hand *Janantratra* and *Kartita*, knowledge and activity are according to *Ishwara Advit Vadha* is the very nature of the supreme. Never can the supreme be thought of without his activity in this

philosophy activity is not an adgent of *Ishwara* as in Shankara but his very specific nature in general terms his activity may be sound up in the five found act of Emaniation or project *Sareshti*. manifestation *Sithiti* with drawal-*Samahara* cancelment of the real nature *Vilaya*, and grace *Anngraha*. He perform these five acts externally. Even when he assumes the form of imperical ego as *Jiva*. According to *Ishwara Advit Vadha* Shiva is *unpritiakrita*. All ways performing five acts.

According to Shankara *Brahaman* is *Nishkriya* without any activity. Maheshwara Nanda says that inactive *Brahman* is as good as unreal. This is the specific nature of *Param-Shiva*. *Parameshwara* hight loard that he always performs the five fold acts of *Saristi* etc. If this that is activity not accepted, *Atma* as defined by *Maya Vedanta* etc. character isted by the want of the slighest trace of stair or activity would be as good as allay.

Ishwara Advit Vada also accepts avidiya or maya. But according to it *avidiya* or *Maya* is not something which happens to effect *Ishwara* It is rather *Ishwara's* own volenterly self imposed limit of himself by his own *Shakti*. power. According to *Shankara Brahman* is entirely in active. All activity is due to *Maya*. According to *Ishwara Advit Vada* activity belongs to *Ishwara* *Maya* derives only its activity from him. Seconuly maya according to *Shakti Brahamavada* is *Anirvachne* indefineable But acco ding to *Ishwera Advit Vada Maya* being the *Shakti* of *Ishwara* or *Shiva* is real and brings aoout multiplicity and ense of defence. According to *Shanta Brahamvada vishya* or the universe is *mithya* or unreal. According to *Ishwara advitvada* the universe is perfectly real. It is simply a display of *Ishwara's* power since *Shakti* is real the universe which has been brought about by *Shakti* is also real. Since Shankara considers maya as neither real not unreal his own delusion is exclusive but the nondual *Shaiva* philosophy considers Maya as Shiva's might. An aspect of Shiva. Therefore the *Shiva* nondualism is integral all inclusive. If *brahman* is real and *Maya* is some indeterminate forced neither real nor unreal as Shankra maintain then there would be a thing of delusion in Shankaras philosophy. Again according to *Maheshwara Advitvada* in the state of imperical ego or *Jiva* the five fold act of Shiva continues. According to *Shanta Brahamavada* Atma self in the state of imperical ego is *Niskriya* or inactive. Wherever the activity there is belongs to *Budhi*. According to Shakara *Vivekta Veda* all mainfestation is only name and form *nama rupa* and cannot be regarded as real in the true sense of the word. According to *Ishwara Advit Vada* the *abiyasa* are real in the sense that they are aspect of the altimately real or *Parama Shiva* though they did not exist in Prama Shiva in the same way in which limited being experience them. They exist in *Param Shiva* as h s experience or ideation. So the *Abiyasa* are in a sense real what constitutes the ideation of the real cannot itself be unreal finally in *Mukthi* liberation. The World according to Shankara is annel In *Shaiva* philosophy it appears as a gleam of Shiva consiouseness or an expression of the wonder delight of consciousness reaity of illusion against description of *Shankar* as *Vadahta* that illusion *maya* is not illusion but creative aspect of the *Param Shiva* as void viz, *Akasha* is not nothing but the creation of all forms All forms is shuniya, and shuniya is all forms. Because all forms comes from *Shuniya* and Shuniya create all forms So all the things which we concieve observe and comes into our perception is nothing but the expression of that lord *Param Shiva*. ◻

Role of Elderly in the Development of Children

☐ P.N. KHER

In a Family, Society, Nation and Country, a child occupies a very important place. He is future of not only family but of country also. His prosperity is prosperity of the country. He is called the father of a man.

Well learned philosopher and philanthrophist—Mr. Rosseau in his book on "boy" title "Mac" wrote that development of child starts from prenatal stage when the baby is in the womb of the mother. It has been stressed in clear words that both husband and wife should behave with care and caution even in the process of pregnancy of a mother so that their good traits and good qualities have good impact in the process of child's growth. Bad temper, anger, pessimism and other negative qualities will have adverse effect on the child's mind.

No child is born stupid. David Lewis an American child psychologist in his book "How to be gifted parent", has said, 'Bright babies are general rule'. Brilliant children are very much an exception. We see before our very eyes, active bright babies who sail through their intitial milestone happily, cheerfully and become unintelligent. They learn a caution that inhibits its true creativity. They learn because we adults teach them. It is our intervention which effectively diminishes and so often destroys early promise. To illustrate the point further let me quote example of both neglected parents and good parents. Neglected parents who undulge in drinking and other bad and evil activities in the presence of their children are enemies of their children This will, primafacie, have adverse reflection in the development of child. In the case of good parents ; let us keep in mind the example of great Maharatha king Shiva ji. He ruled India by dint of his mother's goading and teaching. She told him in his early childhood stories of bravery, courage, conviction, faith and dealt subjects like tolerance, patience, tactics of war, diplomacy, intelligence, hard work, patriotism.

Despite the transition to a pattern of self regulation the infants and young children are still heavily dependant upon elderly people. The talent, experience and knowledge of elderly, people is not rare and lacking in our country. The parents are the child's first and foremost important teachers. The elders in the family supplement the parents role. They po sess invaluable treasure of their vast experience. They not only guide the child but also his parents in terms of difficulty by offering content, information and advice. Besides, they have an important role in transmitting the values of their families and their culture The role of elderly has assumed greater importance in the current working couple era when the parents often are unable to devote adequate time to the demanding child. The elderly serve to re-inforce this effect. It has been documented that children raised in Day Care Centres are more aggressive and less co-operative as compared to the children

brought up at homes. The love and affection of elderly parents has emotional and soothing effect to the children The elderly providing family care (alternative to Day Care approach) and they not only look after nutritional needs of the children but also provide social and intellectural stimulation to these children. Thus, these children are less prone to "deprivation syndromes". Besides grand parents play an important role in helping the child to adjust to psychological changes that take place later in the pubertal phase of development

The services of elderly can also be utilized for social welfare activities relevant to the development of children. Many destitute children are in need of care and protection. It will be both useful to the children, Govt. and elderly.

Elders can play an effective role as councillors in drug abuse prevention. They command respect in the community.

The experience of elderly can be utilized in various building activities of children. They can serve as best educators in respect of sociology, love, affection and good to man-kind. Elderly people develop a sort of friendship with their grand children and they communicate easily with each other.

The U.N. Centre for social development has stressed a great role for all developed & developing countries to take care of street children and their activities. The services of elderly people in the development of children can usefully be utilized for such children also.

Swami Vivekananda's Concept of Work

❑ PROF. K.L. BHALLA

'To cross the dangerous spaces of the soul'.

'And touch the mighty mother stark awake.

'And meet the Omnipotent in this house of flesh.'

'And make of life the million-bodied one.'

Thus observed Shri Aurobindo in 'Savitri'.

'Swami Vivekananda was one who met the Omnipotent in this house of flesh'.

Swamiji said, "I am with you and when I am gone, my spirit will work with you. This life comes and goes—wealth, fame, enjoyments are only for a few days It is better, far better. to die on the field of duty, preaching the truth, then to die like worldly worm. Advance", so his message is to "work unto death."

Work is workship but mostly it does not lead one to salvation. It is selfless work as preached by Lord Krishna in the 'Gita' that can free a mortal from the wordly bondage Swamiji wanted us to serve the poor-Daridra Narayan. It is this mission of his that is being fulfilled by various Seva Kendras of Shri Rama Krishna Mission.

In Reader's Digest a mention is made of a German Lady who has dedicated herself to the service of the lepers in Pakistan. Such examples are worth emulating. Unfortunately in today's world there is such a mad rush for amassing wealth that barring a few most people are engaged in material pursuits that lead them nowhere. As pointed by Wordsworth.

"The world is too much with us, late and soon, getting and spending, we lay waste our powers".

According to Vinobaji, "The wordly people put in arduous labour, but it is in pursuit of low aims We reap what we sow, as is the desire, so is the fruit. The world will not pay more for our wares than the price we ourselves mark on them".

Swamiji was of the view, "Good action will entail on us good effect, bad action bad. But good and bad both forge fetters for the soul. The solution reached in the Gita in regard to this cramping influence of work is; that if we do not attach ourselves to it, it will not hold our soul in bondage".

Work of any sort, good or bad, becomes a source of enslavement unless it is done in a disinterested spirit, without any desire for its fruit or return. Disinterested action is outcome of love and is instrumental in the spiritual liberation of the doer.

It is a 'Yoga' much more difficult than the lonely meditation of an ascetic.

In the 'Yoga' of desireless action, there is a great power. By such action, both the individual and the society are blessed. One who follows 'Svadharma' keeps his body and mind pure. And, as a result of his action, the society in which he lives prospers too.

Many persons argue that desireless action is not possible. If a man has no desire, he will not do any work. What is the motive of sun, moon and such other natural agencies operating day in and day out ? If we study nature, it will become crystal clear to us that whereas action with a desire holds us in bondage, desireless activity makes us free and happy.

Swami Vivekananda wrote, "This unselfishness is the test of religion. He who has more of this unselfishness is more spiritual and nearer to Shiva. And if a man is selfish, even though he has visited all the temples, seen all the places of pilgrimage, and painted himself like a leopard, he is till further off from Shiva".

· Swamiji preached the gospel of Sri Rama Krishna Parmhans. The central idea if his master's teaching is to work for the welfare of all. In the well being of our fellow beings lies our happiness. Let us try to follow in his foot-steps and build a world where there is peace and prosperity for all".

HAPPY NEW YEAR

Greetings From

K. P. Sabha

to

BIRADARI

Reading Between The Lines

□ M L RAINA

For a person with mystic propensities, it is, at times, a rewarding experience to read between the lines of the poems which are simply designed to provide an aesthetic thrill to the readers, for there lies more in the depths below than meets the mind on the surface.

For our discussion here, we take an English poem, "Ode On a Grecian Urn" (by John Keats). On the face of it, the poem conveys the superiority of pictorial art over life, as the former arrests the flow of time Permanence of art is contrasted with trancitoriness of life. But beneath this 'imaginative discovery' we discuss stimulating glimpses of metaphysical thought (Vedantic, to be precise when we study some of the lines of the poem from a spiritual point of view

The poem was inspired by painted pictures on the outer surfaces of some Grecian Urns, depicting Greek art and culture. When Keats looked at these things of beauty, his imagination ran riot and the result was the birth of this poem which is ranked among the best pieces of literary art.

"While talking" to the human figures 'frozen' in different attitudes on the Urn under his observation, the poet tries to resolve, subconsciously, the conflict between life and death He would have himself, as also the readers, believe that art arrests the flow of time which is responsible for death and decay. As such, art challenges death, taking the wind out of its sails, as it were, by arresting its servitor, Time......when we, delve deeper, we discover, with delight, that the poet's sensibilities, at the time, were beginning to blossom into a mature metaphysical philosophy bordering, incidentally, on the Hindu Vedantic thought, pertaining to the purpose of earthly existence. which is the ultimate merger of the self-consciousness with the Super-consciousness or Good-consciousness.

While addressing the painted pipers who are shown in a posture of piping, the poet says—

"Heard melodies are sweet,
But those unheard are sweeter........."

Reading between these lines, we get a significant metaphysical meaning. 'Heard melodies' symbolise world pleasures enjoyed through sense organs. They are, sweet, but there is something sweeter. 'Unheard' melodies are sweeter ; these refer to the 'inner music' (bliss) heard inside. The caplivating medley of colours, scenes and sounds of the visible world is, in essence, illusory. The music and sights accompanying one on—his/her spiritual journey, are believed to be unique, unparalled, lasting, and as such, exaltingly invigorating and thrilling. They "flash upon the inward eye", bringing with them an inexplicable wealth of peace which constitutes real joy.

Being conscious of the transient nature of all sorts of worldly pleasures ('heard music'), the poet urges the pipers to play on, and sing not to "the sensual ear.........but the spirit, ditties of no tone". Toneless ditties (unheard songs) are for the spirit, which can only be felt and not explained.

Vedantic philosophy—the quintessence of different religious scriptures—emphasises, among other things, detachment of the mind from the deceptively alluring aroma of worldly objects. The visible world of senses has no existence of its own ; for "we receive only what we give". It is the mind which makes the world what it is. We experience the visible and the invisible phenomena, which comprise this world, through our sense organs which are the gateways of the mind If the mind is taken out of matter, the latter will cease to have an independent existence .. . The first step in one's long spiritual odyssey is to make the merculiar mind to pull toy out of the tantalising material shapes and sounds (which are as elusive as a mirage in a desert) and turn inward for catching up with the everlasting bliss.

The poet rather vaguely conveys the idea of short lived happiness that comes from the variegateo material sources of attraction. It is pertinent here to a picture on the Urn which depicts a lover pursuing his beloved The poet addresses the lover thus :

"Bold lover ! never never canst than reach thygoal,
Though ever so near.........
Yet grieve not..................."

The artist has brought the pursuit of the lover to a 'still' position in the picture, thus leaving him with no chance to meet this beloved But he need not despair because his loved one will remain positioned at the place where the artist has fixed her. His inability to have physical union with her is a blessing for him in that he will be spared the pain of what the poet calls "love's—sad satiety" which is the common lot of the lovers on this earth, who, when the cup of physical love is filled to the brim and begins to spill over, are left sad and cold. The phrase "love's sad satiety" could be taken for our deep and blind adherence to the bewitching sensory objects, ending up in disgust when the stage of surfeit is reached. The joy that suffers no change comes when we fall in love with the celestial spark which is embedded inside us.

The concluding lines of the poem which, according to some critics, have been added as an afterthought, and don't fit in the scheme of the poem, seem to us to have suddenly unveiled the vagueness of the forgoing lines under discussion. The Vedantic idea of God rings loud and clear in these lines :

"Beauty is Truth, Truth Beauty
That is all ye know ....and all ye—need to know".

The lines are in close proximity to the concept of "SATYAM, SHIVAM, SUNDRAM". The only Reality is God who is both Truth and Beauty. 'Shiv' Symbolises Universal Consciousness, the ultimat Reality and Effulgence (Beauty) which forms everything, from the tiniest of the atoms to the biggest stars of unimaginable magnitude.

All of us, says the poet, know this much ; and he emphatically advocates human efforts to know better what we already know for those who know, know not what they know. The spiritually enlightened persons alone know what they have 'seen' or 'known'. But their experiences are beyond the bounds of communication. □

Readers Write

Dear Editor,

The holding of a conclave by some Kashmiri Pandit out-fits at Jammu, the other day was a commendable exercise on their part (Sept. 10, 95). Save the resolution demandin quasi-settlement of the community outside the state in climatically colder places, all othe resolutions passed in the conclave were genuine and excellent in content encompassing th needs of the day; particularly the unity factor that has been eluding the community even i the present grave situation. The members of the community are spending days in force exile in utter despondency and distress because all the rights accruing to them as a civilize segment of Indian society stand trampled with intent and purpose; first by the insurgency i their home and secondly by the State/Central Government. The present unpalatab circumstances in the valley are in their real form a proxy war enleashed by Pakistan agains India in which process the KP community is being pounded as grist in the political mill o the subcontinent They stand worst hit in this game and nobody cares for them. Pakista having taken a dressing down already three times in open wars does lose nothing in sponsori insurgency and this state of affairs is a long drawn affair in which situation KP communi will continue to suffer. In such an acute situation I feel that a majority of KPs would n like to go outside the State and be again a burden there as we are considered a burden her despite the fact that our stay here boosted the economy of the place tremendously.

In the best interests of the community it is not advisable to ask for settlement outsid the State and invoke resentment of the people where we are proposed to be resettled; thoug temporarily. More feasible course would be to ask for it in Kashmir itself as the Pandit are as good masters of the valley as some others are, but not in scattered manner as the were before insurgency. They should have sure elements of security around them. If new reports from the valley are to be believed as correct, probably a majority of Muslims wi welcome it. Abrogating the right to live in our homeland will be suicidal; leaving a legac of imponderables to our progeny.

Yours etc.
(R K. Sher)
16-9-1995

Dilution of Dogri Culture

Dear Editor,

It has refrence to the piece entitled 'The Jammu Factor' by Dr. Karan Singh, published in Kashmir Times on August 3rd, 1995.

Dr. Karan Singh says that beginning in 1947, Jammu has become the repository of successive waves of refugees from other parts of the state, the latest being the Kashmiri Pandits which has not only created economic and administrative problems but has also diluted the Dogra cultural identity. It is really pitiable that such a statement should have come from a man of his high stature who is the last Maharaja of the whole of the J & K state and not of only Jammu.

Only a fraction out of more than five lakhs of hapless K.P. refugees have taken their abode temporarily in Jammu for fear of their lives and not out of their own choice because they were hounded out of their hearths and homes by Kashmiri militants. They do not constitute more than a speck in the sea of overall population of Dogras in Jammu. Thus the my th of dilution of Dogra cultural identity by their influx does not seem to be correct. Besides Dogra cultural identity is also not so fragile and weak than it got diluted by a feeble gust of the K.P. refugees influx.

Regarding economic problems it may be noted here that illfated and uprooted K P. refugees help in the economic activities of Jammu by contributing crores of rupees annually since migration.

Kashmiri Pandits are one of the most docile and non-violent and non-aggressive people of the world, so one fails to understand what administrative problems their incoming might have created in this part of the state which were not existent before their arrival here.

On the contrary, when about thirty ye rs ago, Muslim refugees from Tibet were forced to leave Tibet due to the Chinese aggression and took refuge in the Kashmir Valley, they were not only welcome by all shades of people but colonies for their rehabilitation were set up in the world famous almond gardans (Bodam wari) near Hari Parbat in Srinagar and other places after uprooting profit earning almond trees without any murmur.

Dr. Sahib who is an ardent follower of Sarva Dharma Sambhava, should, therefore, hesitate to issue such statements that create mistrust, illfeeling, and hatred against hapless and luckless K P refugees and instead, should strive for Sarva Jatiya Sambhava.

Yours Sincerely,
(Babu Jee Koui)
Mishriwala, Jammu

Jai Sharda Maa

Jammu Kashmir Vichar Manch

☐ Shri T. N. RAZDAN
Advocate Superme Court

All of us are fully aware that, enormous forces are ective in the field, thus makin the present a period of immense and rapid changes.

Tactical shift in the strategy by insurgents in the State of J & K is being deliberately projected as a change in the attitude and is being misconceived as the begining of the collapse of Terrorism It, infact is the process of bailing out the Muslim Community of Kashmir by absolving them of immoral and criminal role they played during the period of Turmoil. Ground realities reflected by even official version of the incidents makes it amply clear that Terrorists in Kashmir are still ruling the roots and have spread its tentacts of Terrorism to entire Jammu region besides establishing firm links with the insurgents operating elswhere in the country. Home Minister in the parliament admits the large scale misuse of funds. Local police is bold enough to create obstructions in the day to day working of defence forces including Army. Elimination of Nationalist Community in State by physical liquidation and forced extirpation goes on unabated. Historical process of Islamisation de-Indianisation of the area going since so many decades has neither stopped nor is being reversed. Instead surrenders by Terrorists is being manipulated to create an impression that Gun is disappearing from the scene. De militarisation of the sepratist movement, it must be understood, cann't change the sepratist Tendencies itself. Abused and misused concept of Kashmiryat and much publicised Communal harmony still remains burried under the smouldering embars, and the ashes and the depridated ancestral houses of original in habitants—the Hindus—of Kashmir.

Hindu Community—the single largest minority of Kashmir cann't accept local Terrorists as misguided youth as is being projected by vested interests to sustain the myopic political philosophy of appeasing majority community of Kashamir. Muslim Community of Kashmir has played an active and participatory role in Pan-Islamisation of South Asia a demolition of democratic institutions and Genocide of Hindus.

For Prime Minister and his party it may be a political compulsion to offer a short-of-Azadi to these sepratists, but the Hindu Community of Kashmir will not permit any under cover compromiseed agreement. The community will and infact is exposing these nefarious designs at all levels Community is braving the storm boldly and has ignored persecution at the hands of apathetic administration and biased political leadership, in the larger national interest and it is in the national interest only that community plays its rightful role with all its strength and resources and compel those who are at the helm of affairs to set right the policy perversion of considering Kashmiri muslims as a separate and special entity and sole representative of J & K. state.

The task is not an easy one and the strength of opponents can not be underestimated. Social fabric under the pressure of unfavourable conditions has got weakened and Inter-Community relationship eroded due to dispersal and many other factors.

But inspite of powerful obstacles from outside as well as within, the ideals of future especially that of the unity, dignity and safety are demanding to be brought out and be given some concrete shape in the life of community.

Jammu Kashmir Vichar Manch has devoted its energies to evolve a common and coherent response of the community to every given situation, unity of purpose, the manch is optimistic, will make us agree in lot of issues even after agreeing to disagree on many others.



A havan ceremony for Jagat Kalyan was performed by Kashmiri Sahayak Samaj (a unit of K. P. Sabha Ambphala) Trikuta Nagar on Kartik Purnima Tuesday the 7th November '95. Large number of biradari members participated in this Yagna.

ADKEF Election

All Displaced Kashmiri Employees Forum (ADKEF) conducted election on 30-10-95 and the following persons were elected as office bearers.

President	:	Sh. M. K. Jinsi
Vice-President	:	Sh. C. L. Pandita
Gen. Secratary	:	Sh. V. Kashtikari
Secretary Publicity	:	Sh. R. K. Khosa
J. Secretary	:	Sh. Dalip Raina
Chief Organiser	:	Sh. M. L. Raina
Accountant	:	Sh. D. N. Tickoo
Treasurer	:	Sh. I. K. Karl

Consequent upon immense sense of responsibility and maturity displayed by the members of Biradari and Consensus Election of Sharika Peeth Sanastha (REGD.) for the term 1995-97 and upon taking charge by me as the President, the following Executive Body and various committees are hereby nominated for the terms 1995-97 of the Sanastha in persuance of the Constitution.

A. Executive Body :

1.	Shri J. L. Hak	Vice-President
2.	Shri B K. Mattoo	General Secretary (Elected)
3.	Shri S. L. Shalia	Publicity & Cultural Secretary
4.	Shri J. K. Kaul	Jt. Secretary
5.	Shri P N Raina	Press Secretary
6.	Shri Mohal Lal Razdan	Organising Secretary
7.	Shri B. L. Tickoo	Chief Organiser
8.	Suri Surender Kaul	Treasurer/Accountant
9.	Shri Dwarika Nath Kaul	Estate Manager
10.	Shri P. N. Langer	Internal Auditor

M. L. GANJOO
(President)

Press Note

In a meeting convened by K P.S. Ambphala and presided by its President Sh. T. N. Khosa on 12-11-95 it was unanimously resolved that internally displaced persons of K P. community will participate in the elections subject to the condition that all its demands (already communicated to the authorities) are met and a place of dignity, recognition of minority rights and a legislative safegaurd is given to the displaced community.

It was also resolved that the Governor of the state should resign in view of the fact that Election Commisioner has once more rejected his assessment that conditions in the state are conducive to hold an election, forum.

शिव महिम्नस्तोत्रम

Shiv Mahimnstoutram

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनम वैरव्यतिकर
दशास्योयद्दाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरः पद्म श्रेणी रचित चरणम्भोरुहवलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुहर विस्फूर्जितमिदम ।। 11 ।।

Lord Shiva thee art the destroyer of the demon Tripura on this Maya Jagat of three worlds. Ravana the ten-headed King of Srilanka got overlorship of all the three worlds by thy grace. There was no effort to this effect on his part. No one dared to oppose him in the three worlds. In the absence of any opponent, he felt uneasy to show the might of his twenty numbered arms. It was reward for his constant devotion and dedication. He offered all his ten heads everyday in place of lotus flowers while offering puja at thy lotus feet.

अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठ शिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुहाति खलः ।। 12 ।।

It was due to thy devotion that Ravana got a forest of powerful arms twenty in number. Alas ! the same demon Ravana made on outrageous attack on thy pious abode the mount Kailasha with all the might at his command.

Lord Shiva moved thumb of his left feet in a normal way without any stress that struck Ravana's head and he found himself in the 'Patal-loka'. There is no doubt that his lordship was due to thy grace but he (Ravna) could not control his demon type nature and made this attack.

It is a fact that a mean fellow even on attaining supernatural power does not change his behaviour and mean nature.

Sh. M.L. PUSHKAR